NOW NOIDA अपडेट

वॉल्यूम 1 | अंक 2 | February 2024

Title-Code: UPHIN51287

जंग के मुहाने पर ईरान-पाकिस्तान बारूदी बैटलग्राउंड बनेगा बलूचिस्तान

मिट्टी में मिला नोएडा का माफिया

योगी को धमकी

प्राण प्रतिष्ठा

राम मंदिर विशेष संस्करण

ॐ जयश्रीराम ॐ
जन्मभूमिमम पुरी सुहावनी उत्तर दिसि बह सरजू पावनि

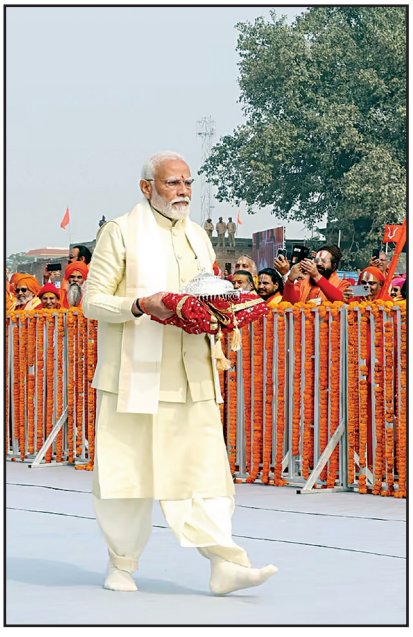

NOW NOIDA अपडेट

सत्य से साक्षात्कार

संपादक मंडल

संपादक : संदीप कुमार ओझा

उप संपादक : पूजा मिश्रा

सहयोगी संपादक : निर्मल गौड़

नोएडा ब्यूरो चीफ : यूनुस आलम

वरिष्ठ संवाददाता : ओम प्रकाश सिंह

संवाददाता : साजिद अली

कला और सयंजोन : अनिरुद्ध शी, गुलशन कुमार

प्रबंध निदेशक : संदीप कुमार ओझा

निदेशक एवं प्रकाशक : MBI DIGITAL PVT LTD

पंजीकृत कार्यालय : प्लॉट नंबर 99 इकोटेक 3 उद्योग केंद्र 2 ग्रेटर नोएडा 201306

मुद्रक एवं प्रकाशक : MBI DIGITAL PVT LTD
प्लॉट नंबर-99, इकोटेक थर्ड, उद्योग केंद्र-2 ग्रेटर नोएडा-201306
दूरभाष- +91 120-4553364
infonownoida@gmail.com

एमबीआई डिजिटल प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सन्दीप कुमार ओझा द्वारा प्लाट नंबर-99, इकोटेक-थर्ड, उद्योग केंद्र-दो, ग्रेटर नोएडा (गौतमबुद्ध नगर) से प्रकाशित व चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिग वर्क प्रा. लि. नोएडा, सी-40, सेक्टर-8 नोएडा से मुद्रित। संपादक सन्दीप कुमार ओझा (TITLE-CODE: UPHIN51287)

कंटेंट्स

वॉल्यूम 1 | अंक- द्वितीय February 2024 मूल्य: ₹50

कवर स्टोरी

राष्ट्र की प्राण प्रतिष्ठा

पृष्ठ - 12

शिक्षा नीतियों और उनके लाभ पर जागरूकता की कमी	03
जंग के मुहाने पर ईरान-पाकिस्तान बारूदी बैटलग्राउंड बनेगा बलूचिस्तान	04
नोएडा में सनी लियोनी का रेस्टोरेंट, स्वाद के साथ ग्लैमर का तड़का	07
प्राण प्रतिष्ठा पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ऐतिहासिक भाषण	08
शिष्टाचार: आधुनिक युग में नैतिकता की कमी	25
पर्यावरण: जागरूकता और संरक्षण	30
मिट्टी में मिला साम्राज्य, शिकंजे में कब आएगा माफिया	33
वायु प्रदूषण जागरूकता ही समस्या का समाधान	34
भू-संपदा (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016 उत्तर प्रदेश मे इसकी यथार्थतता	36
विशेषहनुमानगढ़ी के गद्दीनशीन महंत प्रेमानंद का EXCLUSIVE इंटरव्यू	38
अयोध्या के महापौर का विशेष साक्षात्कार	41
बुलंदशहर को पीएम मोदी ने दिया 20 हजार करोड़ की सौगात, बोले- अब राष्ट्र प्रतिष्ठा को नई ऊंचाई देने का समय	42
बड़े बड़े स्टार्स को पछाड़, ये कपूर एंड कंपनी बनाएंगे नई फिल्म सिटी	44
योगी को धमकी, कौन है खालिस्तानी आतंकी पन्नू?	45
भाग्य का लेखा-जोखा	48

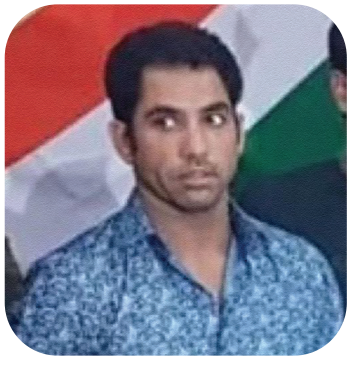

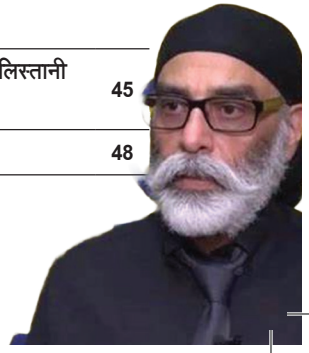

संपादकीय

रामलला के जन्मस्थान पर विराजमान होने के साथ ही देश की राजनीति नई करवट लेने लगी। पहला और बड़ा बदलाव बिहार में दिखा। जहां नीतीश कुमार ने 5वीं दफे पाला बदला। नीतीश कुमार ने राम को लाने वाले नरेंद्र मोदी से पुराना नाते को नया आयाम दिया। नितीश का NDA से जुड़ना सामान्य बात नहीं। ये पूरे विपक्षी गठबंधन I.N.D.I.A के बिखरने का संकेत है। राहुल गांधी की अगुआई वाले महगठबंधन के कई साथी छिटक चुके हैं। बंगाल में ममता बनर्जी एकला चलो की राह पर हैं। पंजाब में आम आदमी पार्टी के अलग सुर हैं। यूपी में अखिलेश यादव राहुल गांधी को उनकी सीटों की सीमा तय कर चुके हैं। दक्षिण में राहुल के साथ चुनाव तक कौन टिकेगा कहना मुश्किल है। यानि नरेंद्र मोदी के लिए 2024 के आगामी चुनाव ज्यादा मुश्किल भरे नहीं दिखते। विपक्ष का बिखरना मोदी को मजबूत बनाएगा इसमें तो किसी को शक नहीं। देश के 17 सूबों में फहराती भगवा पताका इस बात का प्रमाण है कि मोदी का विस्तार अभी बाकी है। 2024 के चुनाव में उनके कद में इजाफा होना बाकी है। लेकिन ये सब क्या राम के नाम पर हुआ। राम को राजनीति के केंद्र में लाया कौन। हिंदुत्व कार्ड सियासत में चला कब गया। अतीत में झांकने पर पता चलता है कि राम की राजनीति कांग्रेस की देन है। श्री राम जन्म स्थान पर ताला खुलवाने का फैसला राजीव गांधी सरकार में हुआ। विवादित ढांचे का विध्वंस कांग्रेस की सरकार में हुआ। लेकिन जन्मभूमि पर मंदिर आंदोलन की अगुआ बन गई भारतीय जनता पार्टी। मंदिर के लिए 1990 में निकली रथयात्रा के मोदी सारथी थे। फिर 2019 में उन्हीं के नेतृत्व के वक्त अदालती फ़ैसला आया। फिर 2020 में मोदी ने मंदिर का शिलान्यास किया।और अब उन्हीं के कर कमलों से प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान हुआ। कहते हैं कि इतिहास भी पुरुषार्थियों का ही साथ देता है।विपक्ष चाहे जितने शोर मचाए। पर ये सत्य है कि पॉच सौ साल के संघर्ष में मंदिर आन्दोलन को तार्किक परिणति तक पहुँचाने में काल मोदी की प्रतीक्षा कर रहा था। इसीलिए कहा जाता है कि कर्मफल तय करता है कि किस काम का श्रेय किसे मिलेगा। राजनीति के मानक पर मंदिर की स्थापना की असंख्य व्याख्याएं होंगी।होने दीजिए। क्यों कि राजनीति राष्ट्र की धड़कन है।उससे आप बच कैसे सकते हैं। लेकिन 2002 से नरेन्द्र मोदी को कांग्रेस नें हिन्दुत्व के जिन सवालों पर घेरा। मोदी पर सेकुलर हथियारों से कांग्रेस ने मुसलसल हमला किया। उन्हें साम्प्रप्रदायिक,हिन्दुत्ववादी बताकर राजनीति के हाशिए पर पहुंचाने की कोशिश की। वो सब नाकाम साबित हुईं। मोदी के लिए हिंदुत्व का मुद्दा उत्प्रेरक का काम करता रहा। कांग्रेस अपने ही फॉर्मूले के भ्रम में उलझी रही। मोदी ने इसी मुद्दे को हथियार बनाकर कांग्रेस को राजनीति में बेमानी बना दिया। जाहिर है राम मंदिर निर्माण के दूरगामी परिणाम होंगे। राम के नाम पर अभी राजनीति भी होगी। देखना ये है कि राम किसके काज बनाएंगे।

संदीप कुमार ओझा
संपादक

डॉ. प्रियंका सिंह
प्रो. एमिटी यूनिवर्सिटी नोएडा

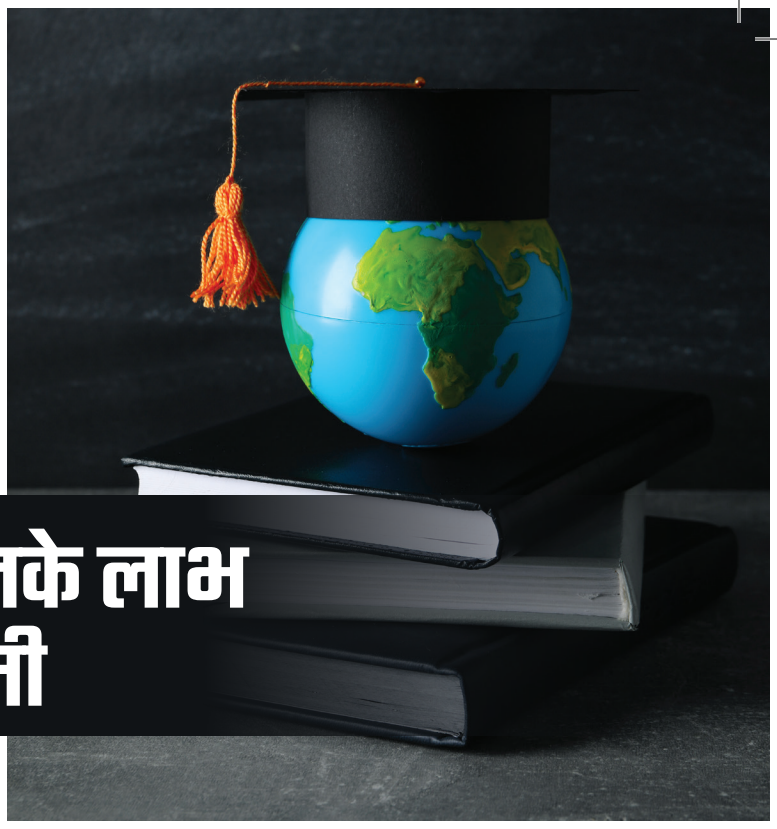

शिक्षा नीतियों और उनके लाभ पर जागरुकता की कमी

शिक्षा शब्द की उत्पत्ति

शिक्षा शब्द संस्कृत के शिक्ष धातु से लिया गया है। इसका तात्पर्य है – सीखना और सीखाना। शिक्षा को अंग्रेजी भाषा में एजुकेशन कहा जाता है।

महापुरुषों द्वारा शिक्षा की परिभाषा

भगवत गीता में कहा गया है कि शिक्षा वह है, जो मनुष्य को उनके बंधनो से आज़ादी दिलाती है और जीवन के हर मोड़ पर विस्तार करती है। गाँधी जी के मुताबिक शिक्षा मनुष्य का सम्पूर्ण विकास करता है। शिक्षा बच्चो की आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक रूप से विकास करती है।

शिक्षा प्राप्त करना सभी मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। शिक्षा एक अमूल्य ज्ञान है। शिक्षा का प्रभाव मनुष्य के व्यक्तित्व पर पड़ता है, जो उसे एक सभ्य, जिम्मेदार और शिक्षित नागरिक बनाता है। शिक्षा सबसे ताकतवर अस्त्र है, जिसके सहारे मनुष्य दुनिया में परिवर्तन ला सकता है।

बेहतर शिक्षा सभी के लिए जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है। यह हम में आत्मविश्वास विकसित करने के साथ ही हमारे व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायता करती है। स्कूली शिक्षा सभी के जीवन में महान भूमिका निभाती है। पूरे शिक्षा तंत्र को प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च माध्यमिक शिक्षा जैसे को तीन भागों में बाँटा गया है। शिक्षा के सभी स्तर अपना एक विशेष महत्व और स्थान रखते हैं। हम सभी अपने बच्चों को सफलता की ओर जाते हुए देखना चाहते हैं, जो केवल अच्छी और उचित शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

आज के समाज में शिक्षा का महत्व काफी बढ़ चुका है। शिक्षा के उपयोग तो अनेक हैं परंतु उसे नई दिशा देने की आवश्यकता है। शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि एक व्यक्ति अपने परिवेश से परिचित हो सके। शिक्षा हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक बहुत ही आवश्यक साधन है। हम अपने जीवन में शिक्षा के इस साधन का उपयोग करके कुछ भी अच्छा प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा का उच्च स्तर लोगों की सामाजिक और पारिवारिक सम्मान तथा एक अलग पहचान बनाने में मदद करता है। शिक्षा का समय सभी के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से बहुत महत्वपूर्ण समय होता है, यहीं कारण है कि हमें शिक्षा हमारे जीवन में इतना महत्व रखती है।आज के आधुनिक तकनीकी संसार में शिक्षा काफी अहम है। आजकल के समय में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए बहुत तरीके सारे तरीके अपनाये जाते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का पूरा तंत्र अब बदल चुका है। हम अब 12वीं कक्षा के बाद दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (डिस्टेंस एजुकेशन) के माध्यम से भी नौकरी के साथ ही पढ़ाई भी कर सकते हैं। शिक्षा बहुत महंगी नहीं है, कोई भी कम धन होने के बाद भी अपनी पढ़ाई जारी रख सकता है।

भारत में शिक्षा का इतिहास

भारत में ज्ञान प्रदान करने की एक समृद्ध परंपरा रही है। 'गुरुकुल' प्राचीन भारत में एक प्रकार की शिक्षा प्रणाली थी जिसमें शिष्य (छात्र) एक ही घर में गुरु के साथ रहते थे। नालंदा में दुनिया की सबसे पुरानी विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली है। दुनिया भर के छात्र भारतीय ज्ञान प्रणालियों की ओर आकर्षित हुए। ज्ञान प्रणाली की कई शाखाओं की उत्पत्ति भारत में हुई। प्राचीन भारत में शिक्षा को एक उच्च गुण माना जाता था।

भारतीय शिक्षा प्रणाली: वर्तमान पिरामिड संरचना

भारतीय शिक्षा प्रणाली को मोटे तौर पर एक पिरामिड संरचना के रूप में माना जा सकता है:

- पूर्व-प्राथमिक स्तर: 5-6 वर्ष की आयु।
- प्राथमिक (प्रारंभिक) स्तर: 6-14 वर्ष की आयु. प्राथमिक स्तर की शिक्षा की गारंटी हमारे संविधान द्वारा अनुच्छेद 21 ए के तहत दी गई है। इस स्तर के लिए, सरकार ने शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम के तहत सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) पेश किया।

जंग के मुहाने पर ईरान-पाकिस्तान बारुदी बैटलग्राउंड बनेगा बलूचिस्तान

पूजा मिश्रा,
उपसंपादक़

16 जनवरी 2024 की तारीख से दुनिया में जंग का नया मैदान खुल गया। जब ईरान ने अपनी मिसाइलों से पाकिस्तान को धुआं धुआं कर दिया। ईरान ने पाकिस्तान के सब्ज कोह में मिसाइल और ड्रोन से हमला कर दहला दिया। पाकिस्तान ने दावा किया कि ईरान के हमले में 2 बच्चों की जान चली गई। वहीं ईरान ने ऐलान किया कि उसके हमले का निशाना पाकिस्तान में जैश अल अदल के अड्डे थे। ईरान की मिसाइल और ड्रोन हमले का जवाब देने में पाकिस्तान ने भी देर नहीं की। महज दो दिन बाद 18 जनवरी को पाकिस्तान ने ईरान में एयरस्ट्राइक कर दी। पाकिस्तानी हमले की जगह ईरान का सरावान था। इस हमले में जान माल के नुकसान की पूरी जानकारी सामने नहीं आई। लेकिन दो मुल्कों का एक दूसरे के घर में घुसकर किए गए वार पलटवार ने पूरी दुनिया में खलबली मचा दी। ईरान और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव से आर पार की जंग के आसार भी बन सकते हैं। क्योंकि इस लड़ाई की जड़ें बहुत गहरी हैं। अगर दो मुस्लिम देश युद्ध के मैदान में आए तो भयावह नतीजे की आशंका भी है। वजह है इन दोनों देशों के खौफनाक हथियार। दुनिया भर के सेनाओं की रैंकिंग जारी करने वाली वेबसाइट फायर पावर इंडेक्स के मुताबिक

पाकिस्तानी सेना 9वें रैंक पर है। वहीं ईरान की रैंकिंग 14वीं है। पाकिस्तानी सेना में जहां 6 लाख 54 हजार एक्टिव सैनिक हैं, वहीं ईरान के पास 6 लाख 10 हजार एक्टिव सैनिक हैं। नौसेना के ताकत को देखें तो बेड़े की ताकत की बात करें तो ईरान के पास 101 और पाकिस्तान के पास 114 बेड़े हैं। ईरान के पास 19 पनडुब्बियां हैं। वहीं पाकिस्तान के पास सिर्फ आठ हैं। पाकिस्तान के पास दो विध्वंसक हैं। वहीं ईरान के पास एक भी नहीं है। ईरान के पास लड़ाकू जहाज 7 तो वहीं पाकिस्तान के पास 9 हैं। पाकिस्तान में 151 एयरपोर्ट हैं। वहीं ईरान के पास 319 एयरपोर्ट हैं। वायुसेना के लिहाज से पाकिस्तान के पास कुल 387 फाइटर जेट हैं तो ईरान के पास 186 जेट हैं।

हलांकि इन सभी हथियारों पर भारी पड़ने वाला एक मात्र हथियार है ऐटम बम। जिसके मामलें पाकिस्तान ईरान पर बहुत भारी है। ईरान अब तक ऐटम बनाने में कामयाब नहीं हो पाया है वहीं पाकिस्तान के ऐटमी जखीरे में 100 से ज्यादा बम होने की जानकारी आती रहती है। जंग हुई तो जाहिर है हर तरह के हथियार इस्तेमाल करने से पाकिस्तानी जनरलों को रोकना मुश्किल होगा। लेकिन इस जंग के आसार क्यों बने। क्या है असल वजह। और इसका कसूरवार कौन है। तो समझिए ईरान पाकिस्तान में फसाद की जड़ है बलूचिस्तान। जिसका विस्कान पाकिस्कतान, ईरान और अफगानिस्तान तीनों मुल्क में है।

पाकिस्तान का बलूचिस्तान

पाकिस्तान में बलूचिस्तान देश की कुल जमीन का करीब 44 फीसदी हिस्सा है मगर पाकिस्तान की करीब 25 करोड़ आबादी में से केवल छह फीसदीय यहां रहती है बलूचिस्तान की ईरान और तालिबान के नियंत्रण वाले अफ़ग़ानिस्तान के साथ एक अस्थिर सीमा है अरब सागर का एक विशाल समुद्र तट भी इसके हिस्से में है. बलूचिस्तान का नाम बलूच नाम की जनजाति पर आधारित है ये सदियों से यहां रहती आई है पाकिस्तान में बलूच सबसे बड़ा जातीय समूह है, उसके बाद पश्तून हैं बलूच पाकिस्तान के पड़ोसी ईरानी प्रांत सिस्तान-बलूचिस्तान के साथ-साथ अफ़ग़ानिस्तान में भी रहते है।

बलूचिस्तान गैस खनिजों जैसे प्राकृतिक संसाधनों के मामले में पाकिस्तान के सबसे अमीर सूबा है। लेकिन यहां के लोग भीषण गरीबी की मार झेलने को मजबूर है। इसका कारण पाकिस्तान की दोगली और शोषण वाली शासननीति है। बलूचिस्तान के खजाने से इस्लामाबाद की तिजोरयां भरी

जाती हैं। पाकिस्तान जनरलों और कठपुतली सरकारों ने बलूचिस्तान को करीब करीब चीन को बेच ही डाला है। चीन ने बलूचिस्तान में अरबों की परियोजनाएं चला रखी हैं। जिसका स्थानीय स्तर पर घनघोर विरोध होता है। जिसे दबाने के लिए पाकिस्तानी सेना बलूचों पर बर्बर अत्याचार करती है। पाकिस्तानी सेना और खुफिया एजेंसियों के खूनी उग्रवाद विरोधी अभियानों और कार्रवाई में हजारों बलूचों के लापता होने के दावे अकसर किए जाते हैं। वॉयस फॉर बलूच मिसिंग पर्सन्स के मुताबिक, बलूचिस्तान से 7,000 से ज्यादा लोग लापता हैं। पाकिस्तानी हुकूमत से अपने हक के लिए शांतिपूर्ण आंदोलन चलाकर बलूच लोग जब थक हार गए तब उन्होंने हथियार उठा लिए।

पाकिस्तान की दुश्मन बलोच आर्मी

पाकिस्तान के बलूचिस्तान में कई बलोच अलगाववादी गुट हैं। इनमें दो अहम संगठन हैं- बलूचिस्तान लिबरेशन फ्रंट (बीएलएफ़) जिसके कमांडर डॉक्टर अल्लाह नज़र बलोच हैं और बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) के कमांडर बशीर ज़ेब हैं। पाकिस्ताना दावा करता है कि इन अलगाववादी संगठनों के विद्रोहियों ने सीमा पारकर ईरान में पनाह ले रखी है।

वहीं ईरान जिसे टेरर ग्रुप मानता है उस जैश अल अदल की ये जानकारी सामने आती है। ईरान के दुश्मन जैश अल-अदल को जानिए सशस्त्र विद्रोही संगठन है जो ईरान की सरकार के ख़िलाफ़ है। ये गुट ईरान के सिस्तान-बलूचिस्तान में सक्रिय है ये संगठन ख़ुद को "सुन्नी मुसलमानों के हक़ों की रक्षा करने वाला" बताता है जैश अल अदल सिस्तान-बलूचिस्तान प्रांत में ईरान के सुरक्षाबलों पर कई हमलों हुए हैं जिसकी ज़िम्मेदारी इस संगठन ने ली है। साल 2005 में ईरान के पूर्व राष्ट्रपति महमूद अहमदिनेजाद पर हुए हमले का शक इसी संगठन जताया गया साल 2009 में ईरान ने इस विद्राही संगठन के प्रमुख अब्दुल मलिक रेगी को गिरफ्तार किया था जिन पर ईरानी सुरक्षाबलों पर बम हमला करने का आरोप हैं साथ ही उन्हें ईरान ने अमेरिका और यूके का एजेंट बताया ईरान ने अब्दुल मलिक रेगी को साल 2010 में मौत की सज़ा दे दी थी।

विशेषज्ञों का मानना है कि दोनों मुल्कों के बीच पैदा हुए तनाव से मध्य पूर्व एशिया में उथल-पुथल मच सकती है। क्योंकि भले ही दोनो मुल्कों के बीच हमलों का पहला दौर ख़त्म हो चुका है लेकिन इसके आगे बदस्तूर जारी रहने से नकारा नहीं जा सकता। वजह है बलूचिस्तान के वजूद की लड़ाई। तीन देशों में फैली बलोच आबादी अपने अस्तित्व की जंग 1947 से जारी रखे हुए हैं। बलूचिस्तान के खनिज खजाने पर भी हुक्मरानों ने नजरें गड़ा रखी हैं। असल झगड़ा बलूतिस्तान का अकूत खजाना ही है। जिसे किसी भी कीमत पर कोई हाथ से जाने नहीं देगा।

नोएडा में सनी लियोनी का रेस्टोरेंट, स्वाद के साथ ग्लैमर का तड़का

चर्चित अभिनेत्री सनी लियोनी बॉलीवुड की फिल्मों और रियलिटी शो में काम करने के बाद अब फूड बिजनेस में भी उतर गई हैं। सनी फिल्मों में काम तो करती ही हैं साथ ही वो अपना बिजनेस भी संभालती हैं। अब उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से सटे नोएडा में अपना एक रेस्टोरेंट खोला है। यानि अब नोएडा के लोगों को सनी लियोनी के रेस्टोरेंट में खाना खाने का मौका मिलेगा। आज हम आपके लिए सनी लियोनी के रेस्टोरेंट के बारे में पूरी जानकारी लेकर आए हैं।

बॉलीवुड की ग्लैमर्स एक्ट्रेस सनी लियोनी अब एक रेस्टोरेंट की मालकिन बन गई हैं। अभिनेत्री ने अपना नया रेस्टोरेंट मुंबई वालों के लिए नहीं बल्कि उत्तर प्रदेश के शहर नोएडा वालों के लिए खोला है और अपने रेस्टोरेंट का नाम 'चिका लोका' रखा है। क्या है 'चिका लोका' का मतलब? अदाकारा सनी लियोनी ने अपने रेस्टोरेंट का नाम 'चिका लोका' रखा है जो बेहद अंतरंग सा नाम लगता है। जब गूगल पर इस नाम का मतलब ढूंढ़ा गया तो पता चला कि 'चिका लोका' का मतलब पागल लड़की होता है। नोएडा के किस सेक्टर में है 'चिका लोका'? यदि आप नोएडा में रहते हैं तो आप भी सनी लियोनी के नये रेस्टोरेंट में खाने का लुत्फ उठा सकते हैं। दरअसल सनी लियोनी ने अपने नये रेस्टोरेंट 'चिका लोका' को नोएडा के एक्सप्रेस वे पर लॉन्च किया है जो कि सेक्टर 129 के बेहद पास पड़ता है। यदि आप भी इस रेस्टोरेंट के खाने का स्वाद लेना चाहते हैं तो आपको नोएडा के सेक्टर 129 की तरफ अपना रुख मोड़ना होगा। कम दाम में उठा सकेंगे स्वाद का मज़ा ऑनलाइन रेस्टोरेंट की जानकारी के मुताबिक बताया जा रहा है कि एक्ट्रेस सनी लियोनी के नोएडा स्थित 'चिका लोका' रेस्टोरेंट में आप कम दामों में स्वादिष्ट खाने का लुत्फ उठा सकते हैं क्योंकि 'चिका लोका' में खाने के दाम बेहद कम रखे गए हैं। यदि आप अपने एक साथी के साथ इस रेस्टोरेंट में जा रहे हैं तो आपको अपने जेब से केवल 1000 रूपये ही खर्च करने होंगे। अगर आप भी इस रेस्टोरेंट के खाने का स्वाद लेना चाहते हैं तो हम आपको बता दें कि आप घर बैठे-बैठे 'चिका लोका' का खाना स्विगी से भी ऑनलाइन ऑर्डर कर सकते हैं।

प्राण प्रतिष्ठा पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ऐतिहासिक भाषण

सियावर रामचंद्र की जय।
सियावर रामचंद्र की जय।

श्रद्धेय मंच, सभी संत एवं ऋषिगण, यहां उपस्थित और विश्व के कोने-कोने में हम सबके साथ जुड़े हुए सभी रामभक्त, आप सबको प्रणाम, सबको राम-राम।

आज हमारे राम आ गए हैं! सदियों की प्रतीक्षा के बाद हमारे राम आ गए हैं। सदियों का अभूतपूर्व धैर्य, अनगिनत बलिदान, त्याग और तपस्या के बाद हमारे प्रभु राम आ गये हैं। इस शुभ घड़ी की आप सभी को, समस्त देशवासियों को, बहुत-बहुत बधाई।

मैं अभी गर्भगृह में ईश्वरीय चेतना का साक्षी बनकर आपके सामने उपस्थित हुआ हूं। कितना कुछ कहने को है... लेकिन कंठ अवरुद्ध है। मेरा शरीर अभी भी स्पंदित है, चित्त अभी भी उस पल में लीन है। हमारे रामलला अब टेंट में नहीं रहेंगे। हमारे रामलला अब इस दिव्य मंदिर में रहेंगे। मेरा पक्का विश्वास है, अपार श्रद्धा है कि जो घटित हुआ है इसकी अनुभूति, देश के, विश्व के, कोने-कोने में रामभक्तों को हो रही होगी। ये क्षण अलौकिक है। ये पल पवित्रतम है। ये माहौल, ये वातावरण, ये ऊर्जा, ये घड़ी... प्रभु श्रीराम का हम सब पर आशीर्वाद है। 22 जनवरी, 2024 का ये सूरज एक अद्भुत आभा लेकर आया है। 22 जनवरी, 2024, ये कैलेंडर पर लिखी एक तारीख नहीं। ये एक नए कालचक्र का उद्गम है। राम मंदिर के भूमिपूजन के बाद से प्रतिदिन पूरे देश में उमंग और उत्साह बढ़ता ही जा रहा था। निर्माण कार्य देख, देशवासियों में हर दिन एक नया विश्वास पैदा हो रहा था। आज हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है, आज हमें श्रीराम का मंदिर मिला है। गुलामी की मानसिकता को

तोड़कर उठ खड़ा हो रहा राष्ट्र, अतीत के हर दंश से हौसला लेता हुआ राष्ट्र, ऐसे ही नव इतिहास का सृजन करता है। आज से हजार साल बाद भी लोग आज की इस तारीख की, आज के इस पल की चर्चा करेंगे। और ये कितनी बड़ी रामकृपा है कि हम इस पल को जी रहे हैं, इसे साक्षात घटित होते देख रहे हैं। आज दिन-दिशाएँ... दिग-दिगंत... सब दिव्यता से परिपूर्ण हैं। ये समय, सामान्य समय नहीं है। ये काल के चक्र पर सर्वकालिक स्याही से अंकित हो रहीं अमिट स्मृति रेखाएँ हैं।

साथियो

हम सब जानते हैं कि जहां राम का काम होता है, वहाँ पवनपुत्र हनुमान अवश्य विराजमान होते हैं। इसलिए, मैं रामभक्त हनुमान और हनुमानगढ़ी को भी प्रणाम करता हूँ। मैं माता जानकी, लक्ष्मण जी, भरत-शत्रुघ्न, सबको नमन करता हूं। मैं पावन अयोध्या पुरी और पावन सरयू को भी प्रणाम करता हूँ। मैं इस पल दैवीय अनुभव कर रहा हूँ कि जिनके आशीर्वाद से ये महान कार्य पूरा हुआ है... वे दिव्य आत्माएँ, वे दैवीय विभूतियाँ भी इस समय हमारे आस-पास उपस्थित हैं। मैं इन सभी दिव्य चेतनाओं को भी कृतज्ञता पूर्वक नमन करता हूँ। मैं आज प्रभु श्रीराम से क्षमा याचना भी करता हूं। हमारे पुरुषार्थ, हमारे त्याग, तपस्या में कुछ तो कमी रह गयी होगी कि हम इतनी सदियों तक ये कार्य कर नहीं पाए। आज वो कमी पूरी हुई है। मुझे विश्वास है, प्रभु राम आज हमें अवश्य क्षमा करेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियों

त्रेता में राम आगमन पर तुलसीदास जी ने लिखा है- प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी। जनित वियोग बिपति सब नासी। अर्थात्, प्रभु का आगमन देखकर ही सब अयोध्यावासी, समग्र देशवासी हर्ष से भर गए। लंबे वियोग से जो आपत्ति आई थी, उसका अंत हो गया। उस कालखंड में तो वो वियोग केवल 14 वर्षों का था, तब भी इतना असह्य था। इस युग में तो अयोध्या और देशवासियों ने सैकड़ों वर्षों का वियोग सहा है। हमारी कई-कई पीढ़ियों ने वियोग सहा है। भारत के तो संविधान में, उसकी पहली प्रति में, भगवान राम विराजमान हैं। संविधान के अस्तित्व में आने के बाद भी दशकों तक प्रभु श्रीराम के अस्तित्व को लेकर कानूनी लड़ाई चली। मैं आभार व्यक्त करूंगा भारत की न्यायपालिका का, जिसने न्याय की लाज रख ली। न्याय के पर्याय प्रभु राम का मंदिर भी न्याय बद्ध तरीके से ही बना।

साथियों

आज गाँव-गाँव में एक साथ कीर्तन, संकीर्तन हो रहे हैं। आज मंदिरों में उत्सव हो रहे हैं, स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे हैं। पूरा देश आज दीवाली मना रहा है। आज शाम घर-घर राम ज्योति प्रज्वलित करने की तैयारी है। कल मैं श्रीराम के आशीर्वाद से धनुषकोडि में रामसेतु के आरंभ बिंदु अरिचल मुनाई पर था। जिस घड़ी प्रभु राम समुद्र पार करने निकले थे वो एक पल था जिसने कालचक्र को बदला था। उस भावमय पल को महसूस करने का मेरा ये विनम्र प्रयास था। वहां पर मैंने पुष्प वंदना की। वहां मेरे भीतर एक विश्वास जगा कि जैसे उस समय कालचक्र बदला था उसी तरह अब कालचक्र फिर बदलेगा और शुभ दिशा में बढ़ेगा। अपने 11 दिन के व्रत-अनुष्ठान के दौरान मैंने उन स्थानों का चरण स्पर्श करने का प्रयास किया, जहां प्रभु राम के चरण पड़े थे। चाहे वो नासिक का पंचवटी धाम हो, केरला का पवित्र त्रिप्रायर मंदिर हो, आंध्र प्रदेश में लेपाक्षी हो, श्रीरंगम में रंगनाथ स्वामी मंदिर हो, रामेश्वरम में श्री रामनाथस्वामी मंदिर हो, या फिर धनुषकोडि... मेरा सौभाग्य है कि इसी पुनीत पवित्र भाव के साथ मुझे सागर से सरयू तक की यात्रा का अवसर मिला। सागर से सरयू तक, हर जगह राम नाम का वही उत्सव भाव छाया हुआ है। प्रभु राम तो भारत की आत्मा के कण-कण से जुड़े हुए हैं। राम, भारतवासियों के अंतर्मन में विराजे हुए हैं। हम भारत में कहीं भी, किसी की अंतरात्मा को छुएंगे तो इस एकत्व की अनुभूति होगी, और यही भाव सब जगह मिलेगा। इससे उत्कृष्ट, इससे अधिक, देश को समायोजित करने वाला सूत्र और क्या हो सकता है?

मेरे प्यारे देशवासियों

मुझे देश के कोने-कोने में अलग-अलग भाषाओं में रामायण सुनने का अवसर मिला है, लेकिन विशेषकर पिछले 11 दिनों में रामायण अलग-अलग भाषा में, अलग-अलग राज्यों से मुझे विशेष रूप से सुनने का सौभाग्य मिला। राम को परिभाषित करते हुये ऋषियों ने कहा है- रमन्ते यस्मिन् इति रामः॥ अर्थात्, जिसमें रम जाया जाए, वही राम है। राम लोक की स्मृतियों में, पर्व से लेकर परम्पराओं में, सर्वत्र समाये हुए हैं। हर युग में लोगों ने राम को जिया है। हर युग में लोगों ने अपने-अपने शब्दों में, अपनी-अपनी तरह से राम को अभिव्यक्त किया है। और ये रामरस, जीवन प्रवाह की तरह निरंतर बहता रहता है। प्राचीन काल से भारत के हर कोने के लोग रामरस का आचमन करते रहे हैं। रामकथा असीम है, रामायण भी अनंत हैं। राम के आदर्श, राम के मूल्य, राम की शिक्षाएं, सब जगह एक समान हैं।

प्रिय देशवासियों

आज इस ऐतिहासिक समय में देश उन व्यक्तित्वों को भी याद कर रहा है, जिनके कार्यों और समर्पण की वजह से आज हम ये शुभ दिन देख रहे हैं। राम के इस काम में कितने ही लोगों ने त्याग और तपस्या की पराकाष्ठा करके दिखाई है। उन अनगिनत रामभक्तों के, उन अनगिनत कारसेवकों के और उन अनगिनत संत महात्माओं के हम सब ऋणी हैं।

मुझे देश के कोने-कोने में अलग-अलग भाषाओं में रामायण सुनने का अवसर मिला है, लेकिन विशेषकर पिछले 11 दिनों में रामायण अलग-अलग भाषा में, अलग-अलग राज्यों से मुझे विशेष रूप से सुनने का सौभाग्य मिला

साथियो

आज का ये अवसर उत्सव का क्षण तो है ही, लेकिन इसके साथ ही ये क्षण भारतीय समाज की परिपक्वता के बोध का क्षण भी है। हमारे लिए ये अवसर सिर्फ विजय का नहीं, विनय का भी है। दुनिया का इतिहास साक्षी है कि कई राष्ट्र अपने ही इतिहास में उलझ जाते हैं। ऐसे देशों

ने जब भी अपने इतिहास की उलझी हुई गांठों को खोलने का प्रयास किया, उन्हें सफलता पाने में बहुत कठिनाई आई। बल्कि कई बार तो पहले से ज्यादा मुश्किल परिस्थितियां बन गईं। लेकिन हमारे देश ने इतिहास की इस गांठ को जिस गंभीरता और भावुकता के साथ खोला है, वो ये बताती है कि हमारा भविष्य हमारे अतीत से बहुत सुंदर होने जा रहा है। वो भी एक समय था, जब कुछ लोग कहते थे कि राम मंदिर बना तो आग लग जाएगी। ऐसे लोग भारत के सामाजिक भाव की पवित्रता को नहीं जान पाए। रामलला के इस मंदिर का निर्माण, भारतीय समाज के शांति, धैर्य, आपसी सद्भाव और समन्वय का भी प्रतीक है। हम देख रहे हैं, ये निर्माण किसी आग को नहीं, बल्कि ऊर्जा को जन्म दे रहा है। राम मंदिर समाज के हर वर्ग को एक उज्जवल भविष्य के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा लेकर आया है। मैं आज उन लोगों से आह्वान करूंगा... आईये, आप महसूस कीजिए, अपनी सोच पर पुनर्विचार कीजिए। राम आग नहीं है, राम ऊर्जा हैं। राम विवाद नहीं, राम समाधान हैं। राम सिर्फ हमारे नहीं हैं, राम तो सबके हैं। राम वर्तमान ही नहीं, राम अनंतकाल हैं।

साथियों

आज जिस तरह राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा के इस आयोजन से पूरा विश्व जुड़ा हुआ है, उसमें राम की सर्वव्यापकता के दर्शन हो रहे हैं। जैसा उत्सव भारत में है, वैसा ही अनेकों देशों में है। आज अयोध्या का ये उत्सव रामायण की उन वैश्विक परम्पराओं का भी उत्सव बना है। रामलला की ये प्रतिष्ठा 'वसुधैव कुटुंबकम्' के विचार की भी प्रतिष्ठा है।

साथियों

आज अयोध्या में, केवल श्रीराम के विग्रह रूप की प्राण प्रतिष्ठा नहीं हुई है। ये श्रीराम के रूप में साक्षात् भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की भी प्राण प्रतिष्ठा है। ये साक्षात् मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राण प्रतिष्ठा है। इन मूल्यों की, इन आदर्शों की आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व को है। सर्वे भवन्तु सुखिन: ये संकल्प हम सदियों से दोहराते आए हैं। आज उसी संकल्प को राममंदिर के रूप में साक्षात् आकार मिला है। ये मंदिर, मात्र एक देव मंदिर नहीं है। ये भारत की दृष्टि का, भारत के दर्शन का, भारत के दिग्दर्शन का मंदिर है। ये राम के रूप में राष्ट्र चेतना का मंदिर है। राम भारत की आस्था हैं, राम भारत का आधार हैं। राम भारत का विचार हैं, राम भारत का विधान हैं। राम भारत की चेतना हैं, राम भारत का चिंतन हैं। राम भारत की प्रतिष्ठा हैं, राम भारत का प्रताप हैं। राम प्रवाह हैं, राम प्रभाव हैं। राम नेति भी हैं। राम नित्यता भी हैं। राम निरंतरता भी हैं। राम विभु हैं, विशद हैं। राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं। और इसलिए, जब राम की प्रतिष्ठा होती है, तो उसका प्रभाव वर्षों या शताब्दियों तक ही नहीं होता। उसका प्रभाव हजारों वर्षों के लिए होता है। महर्षि वाल्मीकि ने कहा है- राज्यम् दश सहस्राणि प्राप्य वर्षाणि राघवः। अर्थात, राम दस हजार वर्षों के लिए राज्य पर प्रतिष्ठित हुए। यानी हजारों वर्षों के लिए रामराज्य स्थापित हुआ। जब त्रेता में राम आए थे, तब हजारों वर्षों के लिए रामराज्य की स्थापना हुई थी। हजारों वर्षों तक राम विश्व पथप्रदर्शन करते रहे थे।

राम भारत की चेतना हैं, राम भारत का चिंतन हैं। राम भारत की प्रतिष्ठा हैं, राम भारत का प्रताप हैं। राम प्रवाह हैं, राम प्रभाव हैं। राम नेति भी हैं। राम नित्यता भी हैं। राम निरंतरता भी हैं। राम विभु हैं, विशद हैं। राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं।

और इसलिए मेरे प्यारे देशवासियों

आज अयोध्या भूमि हम सभी से, प्रत्येक रामभक्त से, प्रत्येक भारतीय से कुछ सवाल कर रही है। श्रीराम का भव्य मंदिर तो बन गया...अब आगे क्या? सदियों का इंतजार तो खत्म हो गया...अब आगे क्या? आज के इस अवसर पर जो दैव, जो दैवीय आत्माएं हमें आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित हुई हैं, हमें देख रही हैं, उन्हें क्या हम ऐसे ही विदा करेंगे? नहीं, कदापि नहीं। आज मैं पूरे पवित्र मन से महसूस कर रहा हूं कि कालचक्र बदल रहा है। ये सुखद संयोग है कि हमारी पीढ़ी को एक कालजयी पथ के शिल्पकार के रूप में चुना

गया है। हज़ार वर्ष बाद की पीढ़ी, राष्ट्र निर्माण के हमारे आज के कार्यों को याद करेगी। इसलिए मैं कहता हूं- यही समय है, सही समय है। हमें आज से, इस पवित्र समय से, अगले एक हजार साल के भारत की नींव रखनी है। मंदिर निर्माण से आगे बढ़कर अब हम सभी देशवासी, यहीं इस पल से समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत के निर्माण की सौगंध लेते हैं। राम के विचार, 'मानस के साथ ही जनमानस' में भी हों, यही राष्ट्र निर्माण की सीढ़ी है।

साथियों

आज के युग की मांग है कि हमें अपने अंतःकरण को विस्तार देना होगा। हमारी चेतना का विस्तार... देव से देश तक, राम से राष्ट्र तक होना चाहिए। हनुमान जी की भक्ति, हनुमान जी की सेवा, हनुमान जी का समर्पण, ये ऐसे गुण हैं जिन्हें हमें बाहर नहीं खोजना पड़ता। प्रत्येक भारतीय में भक्ति, सेवा और समर्पण के ये भाव, समर्थ-सक्षम,भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेंगे। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार ! दूर-सुदूर जंगल में कुटिया में जीवन गुजारने वाली मेरी आदिवासी मां शबरी का ध्यान आते ही, अप्रतिम विश्वास जागृत होता है। मां शबरी तो कबसे कहती थीं- राम आएंगे। प्रत्येक भारतीय में जन्मा यही विश्वास, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगा। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार! हम सब जानते हैं कि निषादराज की मित्रता, सभी बंधनों से परे है। निषादराज का राम के प्रति सम्मोहन, प्रभु राम का निषादराज के लिए अपनापन कितना मौलिक है। सब अपने हैं, सभी समान हैं। प्रत्येक भारतीय में अपनत्व की, बंधुत्व की ये भावना, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगी। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार!

साथियों

आज देश में निराशा के लिए रत्तीभर भी स्थान नहीं है। मैं तो बहुत सामान्य हूं, मैं तो बहुत छोटा हूं, अगर कोई ये सोचता है, तो उसे गिलहरी के योगदान को याद करना चाहिए। गिलहरी का स्मरण ही हमें हमारी इस हिचक को दूर करेगा, हमें सिखाएगा कि छोटे-बड़े हर प्रयास की अपनी ताकत होती है, अपना योगदान होता है। और सबके प्रयास की यही भावना, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगी। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार!

साथियों

लंकापति रावण, प्रकांड ज्ञानी थे, अपार शक्ति के धनी थे। लेकिन जटायु जी की मूल्य निष्ठा देखिए, वे महाबली रावण से भिड़ गए। उन्हें भी पता था कि वो रावण को परास्त नहीं कर पाएंगे। लेकिन फिर भी उन्होंने रावण को चुनौती दी। कर्तव्य की यही पराकाष्ठा समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार है। और यही तो है, देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार। आइए, हम संकल्प लें कि राष्ट्र निर्माण के लिए हम अपने जीवन का पल-पल लगा देंगे। रामकाज से राष्ट्रकाज, समय का पल-पल, शरीर का कण-कण, राम समर्पण को राष्ट्र समर्पण के ध्येय से जोड़ देंगे।

मुझे देश के कोने-कोने में अलग-अलग भाषाओं में रामायण सुनने का अवसर मिला है, लेकिन विशेषकर पिछले 11 दिनों में रामायण अलग-अलग भाषा में, अलग-अलग राज्यों से मुझे विशेष रूप से सुनने का सौभाग्य मिला

मेरे देशवासियों

प्रभु श्रीराम की हमारी पूजा, विशेष होनी चाहिए। ये पूजा, स्व से ऊपर उठकर समष्टि के लिए होनी चाहिए। ये पूजा, अहम से उठकर वयम के लिए होनी चाहिए। प्रभु को जो भोग चढ़ेगा, वो विकसित भारत के लिए हमारे परिश्रम की पराकाष्ठा का प्रसाद भी होगा। हमें नित्य पराक्रम, पुरुषार्थ, समर्पण का प्रसाद प्रभु राम को चढ़ाना होगा। इनसे नित्य प्रभु राम की पूजा करनी होगी, तब हम भारत को वैभवशाली और विकसित बना पाएंगे।

मेरे प्यारे देशवासियों

ये भारत के विकास का अमृतकाल है। आज भारत युवा शक्ति की पूंजी से भरा हुआ है, ऊर्जा से भरा हुआ है। ऐसी सकारात्मक परिस्थितियां, फिर ना जाने कितने समय बाद बनेंगी। हमें अब चूकना नहीं है, हमें अब बैठना नहीं है। मैं अपने देश के युवाओं से कहूंगा। आपके सामने हजारों वर्षों की परंपरा की प्रेरणा है। आप भारत की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं...जो चांद पर तिरंगा लहरा रही है, जो 15 लाख किलोमीटर की यात्रा करके, सूर्य के पास जाकर मिशन आदित्य को सफल बना रही है, जो आसमान में तेजस... सागर में विक्रांत...का परचम लहरा रही है। अपनी विरासत पर गर्व करते हुए आपको भारत का नव प्रभात लिखना है। परंपरा की पवित्रता और आधुनिकता की अनंतता, दोनों ही पथ पर चलते हुए भारत, समृद्धि के लक्ष्य तक पहुंचेगा।

मेरे साथियों

आने वाला समय अब सफलता का है। आने वाला समय अब सिद्धि का है। ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भारत के उत्कर्ष का, भारत के उदय का, ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भव्य भारत के अभ्युदय का, विकसित भारत का! ये मंदिर सिखाता है कि अगर लक्ष्य, सत्य प्रमाणित हो, अगर लक्ष्य, सामूहिकता और संगठित शक्ति से जन्मा हो, तब उस लक्ष्य को प्राप्त करना असंभव नहीं है। ये भारत का समय है और भारत अब आगे बढ़ने वाला है। शताब्दियों की प्रतीक्षा के बाद हम यहां पहुंचे हैं। हम सब ने इस युग का, इस कालखंड का इंतजार किया है। अब हम रुकेंगे नहीं। हम विकास की ऊंचाई पर जाकर ही रहेंगे। इसी भाव के साथ रामलला के चरणों में प्रणाम करते हुए आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं। सभी संतों के चरणों में मेरे प्रणाम।

सियावर रामचंद्र की जय।

सियावर रामचंद्र की जय।

सियावर रामचंद्र की जय।

राष्ट्र की प्राण प्रतिष्ठा

अयोध्या राम युग सरीखी सजी थी। देश दुनिया से लोग जुटे थे। राम भक्तों की तरसती आंखें, व्याकुल मन, प्रसन्न जन जन उस घड़ी निहाल हुआ जा रहा था जब श्री रामलला के विग्रह में प्राण पूजा का पर्व मनाया जा रहा था। प्राणप्रतिष्ठा से पहले जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नें विग्रह की आँख से पट्टी हटाई तो असंख्य जनों की आँखें चौंधिया गयीं। पूरा माहौल रोमांचित हो उठा।। देखने वालों को लगा रामलला बोल उठेंगे। विग्रह अद्भुत,अपूर्व, मनोहरी लगा। भगवान का श्यामल रूप। प्रसन्न मुद्रा। चंद्रमण्डल की तरह शोभायमान थी। रामलला से तेज, आभा, प्रकाश, माधुर्य, कोमलता और सौरभ का झरना झर रहा था। उन्हें दंडवत प्रणाम कर श्रद्धालु आनंद के सरोवर में गोते लगा रहे थ। इस ऐतिहासिक अनुष्ठान से पूर्व भी बहुत कुछ हुआ है।

क्या आप जान पाए कि प्राण प्रतिष्ठा की पूरी प्रक्रिया काफी लंबी रही। और कई दिनों तक चली। राम लला की मूर्ति का अनुष्ठान का कार्य 16 जनवरी से शुरु हुआ। जब मूर्ति का द्वादश अधिवास किया गया है, जिसमें मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा से पहले धार्मिक गतिविधियां की गई।

16 जनवरी को प्रायश्चित्त और कर्मकूटि पूजन किया गया.
17 जनवरी को मूर्ति का परिसर में प्रवेश करवाया गया.
18 जनवरी की शाम को तीर्थ पूजन, जल यात्रा, जलाधिवास और गंधाधिवास करवाया गया.
19 जनवरी की सुबह औषधाधिवास, केसराधिवास, घृताधिवास करवाया गया.
19 जनवरी की शाम को धान्याधिवास किया गया.
20 जनवरी की सुबह मूर्ति का शर्कराधिवास, फलाधिवास करवाया गया.
20 जनवरी की शाम को राम लला की मूर्ति का पुष्पाधिवास किया गया.
21 जनवरी की सुबह मध्याधिवास किया गया.
21 जनवरी की शाम को शय्याधिवास करवाया गया.

22 जनवरी को क्या क्या हुआ ?

प्राण प्रतिष्ठा में पूजन कार्य की बात करें तो नित्य पूजन हवन पारायण, फिर देवप्रबोधन, उसके बाद प्रतिष्ठापूर्वकृत्य, फिर देवप्राण प्रतिष्ठा, महापूजा, आरती, प्रासादोत्सर्ग, उत्तरांगकर्म, पूर्णाहुति, आचार्य को गोदान, कर्मेश्वरार्पणम, ब्राह्मणभोजन, प्रैषात्मक पुण्याहवाचन, ब्राह्मण दक्षिणा दानादि संकल्प, आशीर्वाद और फिर कर्मसमाप्ति की गई। पूजन के दौरान नेत्र मिलन की विधि के बाद सबको दर्शन की घड़ी आई। नेत्रमिलन की विधि में पीएम मोदी ने मूर्ति के पीछे खड़े होकर और मूर्ति के सामने लगे दर्पण में देखते हुए सोने के तार से काजल लगाया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दोपहर 12 बजकर 5 मिनट से लेकर 12 बजकर 55 मिनट प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम किया।

अयोध्या में जो घट रहा थ उसे समस्त संसार देख रहा था। लेकिन 22 जनवरी को पूरे भारत में...भारत से दूर जहां भी सनातनी बसे हैं वहां उत्सव मनाया जा रहा था। 22 जनवरी को मानो राम मंदिर के साथ ही इस राष्ट्र की चेतना की प्राण प्रतिष्ठा हुई। रामलला का नया मंदिर हर लिहाज

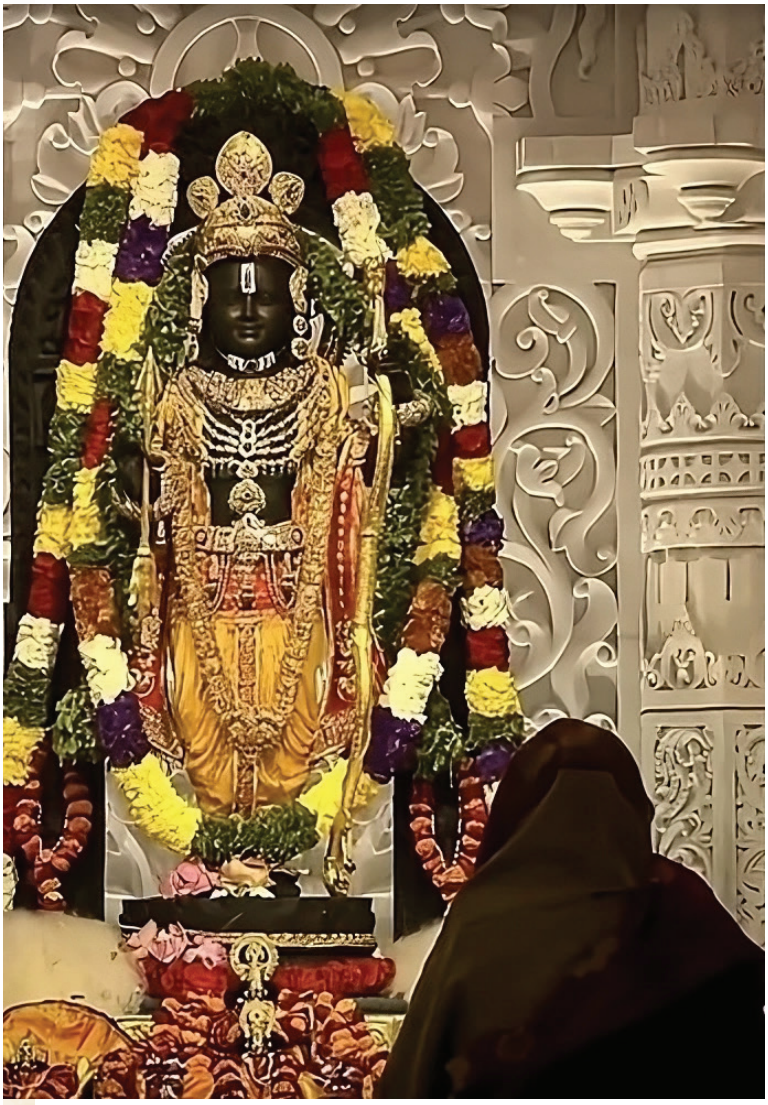

नेत्रमिलन की विधि में पीएम मोदी ने मूर्ति के पीछे खड़े होकर और मूर्ति के सामने लगे दर्पण में देखते हुए सोने के तार से काजल लगाया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दोपहर 12 बजकर 5 मिनट से लेकर 12 बजकर 55 मिनट प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम किया

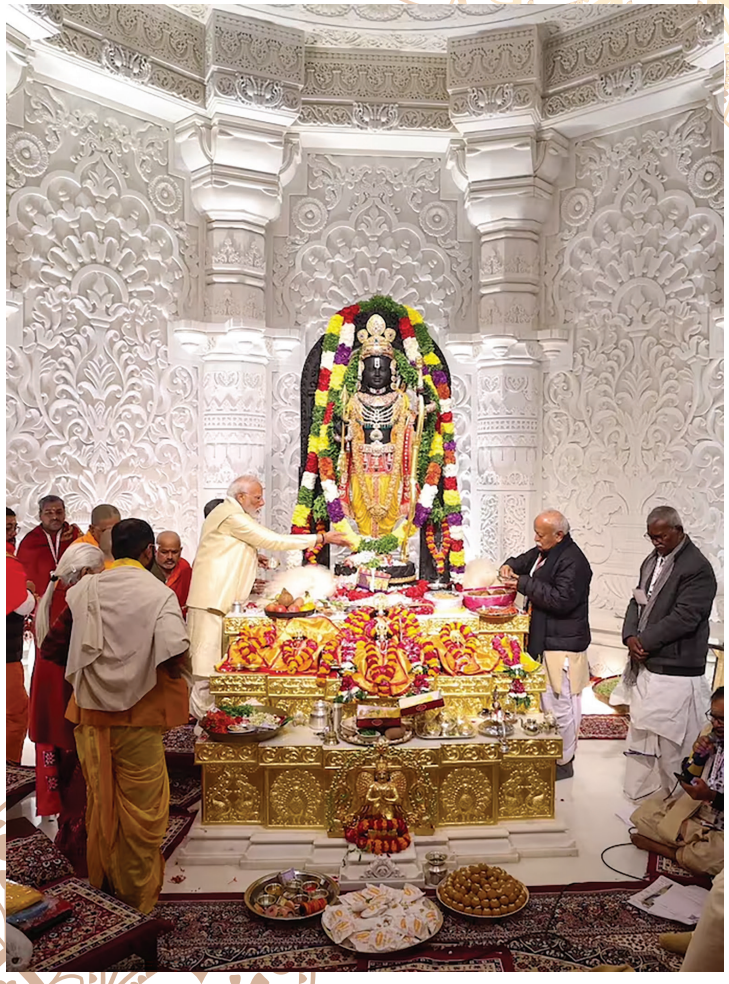

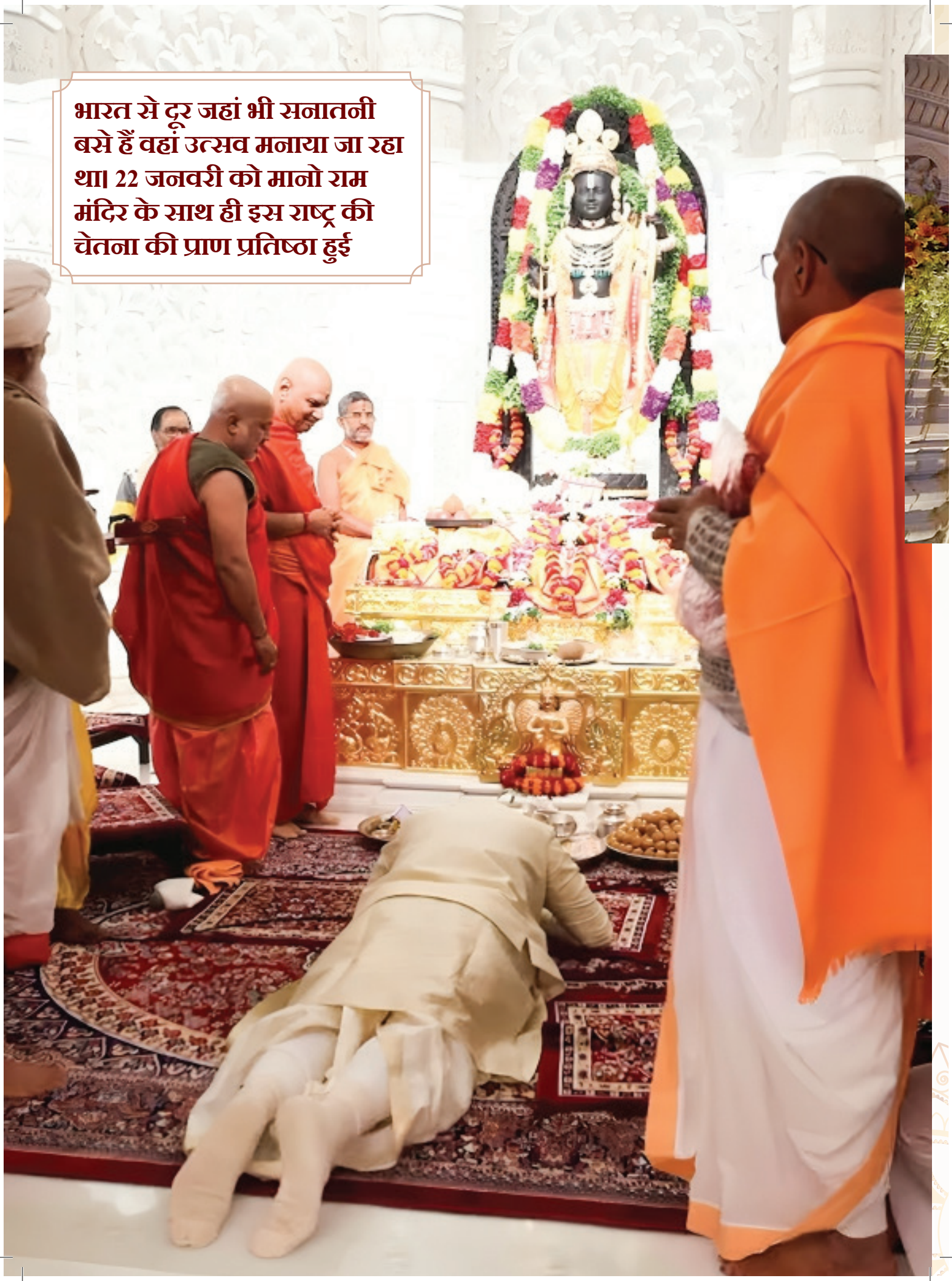

> **भारत से दूर जहां भी सनातनी बसे हैं वहां उत्सव मनाया जा रहा था। 22 जनवरी को मानो राम मंदिर के साथ ही इस राष्ट्र की चेतना की प्राण प्रतिष्ठा हुई**

से अद्भुत है। निर्माण शैली से लेकर मंदर की तमाम विशेषताओं को जानिए।

- राम मंदिर परम्परागत नागर शैली में बनाया जा रहा है।
- राम मंदिर की लंबाई (पूर्व से पश्चिम) 380 फीट, चौड़ाई 250 फीट तथा ऊंचाई 161 फीट रहेगी।
- राम मंदिर तीन मंजिला रहेगा। प्रत्येक मंजिल की ऊंचाई 20 फीट रहेगी। मंदिर में कुल 392 खंभे व 44 द्वार होंगे।
- मुख्य गर्भगृह में प्रभु श्रीराम का बालरूप (श्रीरामलला सरकार का विग्रह), तथा प्रथम तल पर श्रीराम दरबार होगा।
- मंदिर में 5 मंडप होंगे: नृत्य मंडप, रंग मंडप, सभा मंडप, प्रार्थना मंडप व कीर्तन मंडप
- खंभों और दीवारों में देवी देवता तथा देवांगनाओं की मूर्तियां उकेरी जा रही हैं।
- मंदिर में प्रवेश पूर्व दिशा से, 32 सीढ़ियां चढ़कर सिंह द्वार से होगा।
- दिव्यांगजन एवं वृद्धों के लिए मंदिर में रैम्प और लिफ्ट की व्यवस्था रहेगी।
- मंदिर के चारों ओर चारों ओर आयताकार परकोटा रहेगा। चारों दिशाओं में इसकी कुल लंबाई 732 मीटर तथा चौड़ाई 14 फीट होगी।
- परकोटा के चारों कोनों पर सूर्यदेव, मां भगवती, गणपति व भगवान शिव को समर्पित चार मंदिरों का निर्माण होगा। उत्तरी भुजा में मां अन्नपूर्णा, व दक्षिणी भुजा में हनुमान जी का मंदिर रहेगा।
- मंदिर के समीप पौराणिक काल का सीताकूप विद्यमान रहेगा।
- मंदिर परिसर में प्रस्तावित अन्य मंदिर- महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य, निषादराज, माता शबरी व ऋषिपत्नी देवी अहिल्या को समर्पित होंगे।
- दक्षिण पश्चिमी भाग में नवरत्न कुबेर टीला पर भगवान शिव के प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया है एवं तथा वहां जटायु प्रतिमा की स्थापना की गई है।
- मंदिर में लोहे का प्रयोग नहीं होगा। धरती के ऊपर बिलकुल भी कंक्रीट नहीं है।
- मंदिर के नीचे 14 मीटर मोटी रोलर कॉम्पेक्टेड कंक्रीट (RCC) बिछाई गई है। इसे कृत्रिम चट्टान का रूप दिया गया है।
- मंदिर को धरती की नमी से बचाने के लिए 21 फीट ऊंची प्लिंथ ग्रेनाइट से बनाई गई है।
- मंदिर परिसर में स्वतंत्र रूप से सीवर ट्रीटमेंट प्लांट, वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट, अग्निशमन के लिए जल व्यवस्था तथा स्वतंत्र पॉवर स्टेशन का निर्माण किया गया है, ताकि बाहरी संसाधनों पर न्यूनतम निर्भरता रहे।
- 25 हजार क्षमता वाले एक दर्शनार्थी सुविधा केंद्र (Pilgrims Facility Centre) का निर्माण किया जा रहा है, जहां दर्शनार्थियों का सामान रखने के लिए लॉकर व चिकित्सा की सुविधा रहेगी।
- मंदिर परिसर में स्नानागार, शौचालय, वॉश बेसिन, ओपन टैप्स आदि की सुविधा भी रहेगी।
- मंदिर का निर्माण पूर्णतया भारतीय परम्परानुसार व स्वदेशी तकनीक से किया जा रहा है। पर्यावरण-जल संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। कुल 70 एकड़ क्षेत्र में 70% क्षेत्र सदा हरित रहेगा।

पूजा मिश्रा,
उपसंपादक़

प्रण से प्राण प्रतिष्ठा तक, राम जन्मस्थान का इतिहास

1528: जन्मस्थान पर बाबरी

शुरूआत सन 1526 से हुई। ये वही साल था जब बाबर भारत आया था। दो साल तक बाबर भारत में दबदबा बढ़ाता गया। इसी दौरान बाबर के सूबेदार मीरबाकी ने अयोध्या में एक मस्जिद बनवाई। ये मस्जिद उसी जगह बनाई गई जहां भगवान राम का जन्म हुआ था। बाबर के सम्मान में मीर बाकी ने इस मस्जिद का नाम बाबरी मस्जिद रखा। ये वो वक्त था जब मुगल पूरे देश में पैर पसार रहे थे। मुगलों और नवाबों के शासन के वक्त यानी 1528 से 1853 तक इस मामले में हिंदू छोटे छोटे आंदोलन ही करते रहे। लेकिन 19वीं सदी में मुगलों और नवाबों का शासन कमजोर पड़ने लगा। अंग्रेज हुकूमत प्रभावी हो चुकी थी। इस दौर में ही हिंदुओं ने राम लला के जन्मस्थान की मांग तेज कर दी। भगवान के जन्मस्थान पर बने मंदिर को तोड़कर बनाई गई बाबरी को हटाने की मुहिम ने 1858 के बाद जोर पकड़ चुकी थी।

1858: 330 साल बाद F.I.R

मीरबाकी के मस्जिद बनाने के 330 साल बाद 1858 में पहली कानूनी लड़ाई शुरू हुई। जन्मस्थान पर हवन, पूजन करने के मामले में एफआईआर फ़ैजाबाद में दर्ज हुई। अयोध्या रिविजिटेड किताब में लिखा है कि 1 दिसंबर 1858 को अवध के थानेदार शीतल दुबे ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि विवादित परिसर में एक चबूतरा बना है। ये पहला कानूनी दस्तावेज है जिसमें परिसर के अंदर राम के प्रतीक होने के प्रमाण हैं। इसके बाद तारों की एक बाड़ खड़ी कर विवादित भूमि के अंदर और बाहरी परिसर में मुसलमानों और हिंदुओं को अलग-अलग पूजा और नमाज की अनुमति दी गई।

1885: अदालत में रामलला

ये साल 1885 था जब राम जन्मभूमि के लिए लड़ाई अदालत में पहुंची। निर्मोही अखाड़े के मंहत रघुबर दास ने फैजाबाद के न्यायालय में स्वामित्व को लेकर दीवानी मुकदमा दायर किया। दास ने बाबरी ढांचे के बाहरी आंगन में स्थित राम चबूतरे पर बने अस्थायी मंदिर को पक्का बनाने और छत डालने की मांग की। जज ने फैसला सुनाया कि वहां हिंदुओं को पूजा-अर्चना का अधिकार है, लेकिन वे जिलाधिकारी के फैसले के खिलाफ मंदिर को पक्का बनाने और छत बनाने का आदेश नहीं दे सकते।

1949: रामलला का प्राक्ट्य

22-23 दिसंबर की दरमियानी रात विवादित ढांचे के बीच वाले गुंबद के नीचे रामलला के विग्रह के प्राक्ट्य का दावा किया गया। हवलदार अब्दुल बरकत की ड्यूटी उस रात विवादित परिसर में थी। बरकत ने एफआईआर में बताया कि रात 12 बजे अलौकिक रोशनी हुई। रोशनी कम होने पर उसने जो देखा उसपर भरोसा नहीं हुआ। बरकत ने बताया कि वहां भगवान की मूर्ति विराजमान थी। अब्दुल बरकत का बयान चमत्कार का प्रमाण साबित हुआ।

1950: आजाद भारत में रामलला का मुकदमा

हिंदू महासभा के सदस्य गोपाल सिंह विशारद ने 16 जनवरी, 1950 को सिविल जज, फैजाबाद की अदालत में ये मुकदमा दायर किया। विशारद ने ढांचे के मुख्य गुंबद के नीचे मौजूद भगवान की प्रतिमाओं की पूजा-अर्चना की मांग की थी। करीब 11 महीने बाद 5 दिसंबर 1950 को ऐसी ही मांग करते हुए महंत रामचंद्र परमहंस ने सिविल जज के यहां मुकदमा दाखिल किया। मुकदमे में दूसरे पक्ष को संबंधित स्थल पर पूजा-अर्चना में बाधा डालने से रोकने की मांग रखी गई। 3 मार्च 1951 को गोपाल सिंह विशारद मामले में न्यायालय ने मुस्लिम पक्ष को पूजा-अर्चना में बाधा न डालने की हिदायत दी। ऐसा ही आदेश परमहंस की तरफ से दायर मुकदमे में भी दिया गया।

1959: निर्मोही अखाड़े की मांग

17 दिसंबर 1959 को रामानंद संप्रदाय की तरफ से निर्मोही अखाड़े के 6 लोगों ने मुकदमा दायर कर इस स्थान पर अपना दावा ठोका। साथ ही मांग रखी कि रिसीवर प्रियदत्त राम को हटाकर उन्हें पूजा-अर्चना की अनुमति दी जाए। ये उनके अधिकार हैं। केस की कड़ी में एक और मुकदमा 18 दिसंबर 1961 को दर्ज किया गया। ये मुकदमा उत्तर प्रदेश के केंद्रीय सुन्नी वक्फ बोर्ड ने दायर किया। जिसमें कहा गया कि ये जगह मुसलमानों की है। ढांचे को हिंदुओं से लेकर मुसलमानों को दे दिया जाए। ढांचे के अंदर से मूर्तियां हटा दी जाएं।

1982: जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन

सन 1982 में विश्व हिंदू परिषद ने राम, कृष्ण और शिव के स्थलों पर मस्जिदों के निर्माण को साजिश करार देत हुए इनकी मुक्ति के लिए आंदोलन चलाने का एलान किया। दो साल बाद 8 अप्रैल 1984 को दिल्ली में संत-महात्माओं, हिंदू नेताओं ने अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि स्थल की मुक्ति और ताला खुलवाने को आंदोलन का फैसला ले लिया।

1986: ताला खुला

1 फरवरी 1986 को फैजाबाद के जिला न्यायाधीश केएम पाण्डेय ने स्थानीय अधिवक्ता उमेश पाण्डेय की अर्जी पर विवादित परिसर पर लगाए गए ताले को खोलने का आदेश दे दिया। इस अदालती आदेश पर अमल महज 24 घंटे के भीतर हो गया। हलांकि फैसले के खिलाफ इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ खंडपीठ में दायर अपील खारिज हो गई।

1989: मंदिर का शिलान्यास

जनवरी 1989 में प्रयाग में कुंभ मेले के दौरान मंदिर निर्माण के लिए गांव-गांव शिला पूजन कराने का फैसला हुआ। साथ ही 9 नवंबर 1989 को श्रीराम जन्मभूमि स्थल पर मंदिर के शिलान्यास की घोषणा की गई। काफी विवाद और खींचतान के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने शिलान्यास की इजाजत दे दी। बिहार निवासी दलित समाज से आने वाले कामेश्वर चौपाल ने शिलान्यास किया।

1990: BJP की रथयात्रा

90 के दशक में राम मंदिर आंदोलन तेज हो गया। सितंबर 1990 को लाल कृष्ण आडवाणी ने सोमनाथ अयोध्या रथ यात्रा शुरू कर दी। यात्रा ने राम जन्मभूमि आंदोलन को और धार दे दी। नफे नुकसान का अनुमान लगाकर नेताओं ने अपने अपने दांव चले। बिहार में लालू प्रसाद यादव ने लाल कृष्ण आडवाणी को गिरफ्तार कर लिया। अयोध्या में कारसेवकों का नरसंहार हुआ। जिसके बाद केंद्र में सत्ता परिवर्तन हो गया। भाजपा के समर्थन से बनी जनता दल की सरकार गिर गई। कांग्रेस के समर्थन से चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बने। ये सरकार भी ज्यादा नहीं चली। नए सिरे से चुनाव हुए और एक बार फिर केंद्र में कांग्रेस सत्ता में आई। इन सब के बीच आई वो ऐतिहासिक तारीख जिसका जिक्र किए बिना ये किस्सा पूरा नहीं हो सकता है।

1992: ढांचा विध्वंस

6 दिसंबर 1992। अयोध्या पहुंचे हजारों कारसेवकों ने विवादित ढांचे को ढहा दिया। ढांचे की जगह अस्थायी मंदिर बनाकर राम भक्तों ने पूजा-अर्चना शुरू कर दी। तब केंद्र की तत्कालीन पीवी नरसिम्हा राव सरकार ने यूपी में कल्याण सिंह सरकार के साथ राज्यों की सभी भाजपा सरकारों को बर्खास्त कर दिया। उत्तर प्रदेश सहित देश में कई जगह सांप्रदायिक हिंसा हुई, जिसमें अनेक लोगों की मौत हो गई। अयोध्या श्रीराम जन्मभूमि थाना में ढांचा ध्वंस मामले में भाजपा के कई नेताओं समेत हजारों लोगों पर मुकदमा दर्ज कर दिया गया। इसके साथ ही राम काज की कानूनी लड़ाई में मुकदमों की संख्या में और इजाफा होने लगा।

1993: दर्शन-पूजन की अनुमति मिल गई

बाबरी ढहाए जाने के दो दिन बाद 8 दिसंबर 1992 को अयोध्या में कर्फ्यू लगा था। वकील हरिशंकर जैन ने उच्च न्यायालय की लखनऊ खंडपीठ में गुहार लगाई कि भगवान भूखे हैं। राम भोग की अनुमति दी जाए। करीब 25 दिन बाद 1 जनवरी 1993 को न्यायाधीश हरिनाथ तिलहरी ने दर्शन-पूजन की अनुमति दे दी। 7 जनवरी 1993 को केंद्र सरकार ने ढांचे वाले स्थान और कल्याण सिंह सरकार द्वारा न्यास को दी गई भूमि सहित यहां पर कुल 67 एकड़ भूमि का अधिग्रहण कर लिया।

2002: हाईकोर्ट में शुरू हुई मालिकाना हक पर सुनवाई

अप्रैल 2002 में उच्च न्यायालय की लखनऊ खंडपीठ ने विवादित स्थल का मालिकाना हक तय करने के लिए सुनवाई शुरू हुई। उच्च न्यायालय ने 5 मार्च 2003 को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को संबंधित स्थल पर खुदाई का निर्देश दिया। 22 अगस्त 2003 को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने न्यायालय को रिपोर्ट सौंपी। इसमें संबंधित स्थल पर जमीन के नीचे एक विशाल हिंदू धार्मिक ढांचा (मंदिर) होने की बात कही गई।

2010: इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने दिया ऐतिहासिक फैसला

30 सितंबर 2010 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इस स्थल को तीनों पक्षों श्रीराम लला विराजमान, निर्मोही अखाड़ा और सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड में बराबर-बराबर बांटने का आदेश दिया। न्यायाधीशों ने बीच वाले गुंबद के नीचे जहां मूर्तियां थीं, उसे जन्मस्थान माना। इसके बाद मामला सर्वोच्च न्यायालय पहुंचा। 21 मार्च 2017 को सर्वोच्च न्यायालय ने मध्यस्थता से मामले सुलझाने की पेशकश की। यह भी कहा कि दोनों पक्ष राजी हों तो वह भी इसके लिए तैयार है।

2017: सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मध्यस्थता की पेशकश

अयोध्या में राम जन्मभूमि की लड़ाई अब देश की सर्वोच्च अदालत तक पहुंच चुकी थी। 21 मार्च 2017 को सर्वोच्च न्यायालय ने मध्यस्थता से मामले सुलझाने की पेशकश की। यह भी कहा कि दोनों पक्ष राजी हों तो वह भी इसके लिए तैयार है।

2019: सुप्रीम फैसला और मंदिर निर्माण का रास्ता साफ

6 अगस्त 2019 को सर्वोच्च न्यायालय ने प्रतिदिन सुनवाई शुरू की। 16 अक्तूबर 2019 को सर्वोच्च न्यायालय में सुनवाई पूरी हुआ और कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया। इससे पहले 40 दिन तक लगातार सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई।

9 नवंबर 2019 को 134 साल से चली आ रही लड़ाई में अब वक्त था अंतिम फैसले का। 9 नवंबर 2019 को सर्वोच्च न्यायालय ने संबंधित स्थल को श्रीराम जन्मभूमि माना और 2.77 एकड़ भूमि रामलला के स्वामित्व की मानी। वहीं, निर्मोही अखाड़ा और सुन्नी वक्फ बोर्ड के दावों को खारिज कर दिया गया। इसके साथ ही कोर्ट ने निर्देश दिया कि मंदिर निर्माण के लिए केंद्र सरकार तीन महीने में ट्रस्ट बनाए और ट्रस्ट निर्मोही अखाड़े के एक प्रतिनिधि को शामिल करे। इसके अलावा यह भी आदेश दिया कि उत्तर प्रदेश की सरकार मुस्लिम पक्ष को वैकल्पिक रूप से मस्जिद बनाने के लिए 5 एकड़ भूमि किसी उपयुक्त स्थान पर उपलब्ध कराए।

2020: अयोध्या में मंदिर की आधारशिला के साथ निर्माण शुरू

90 के दशक में राम मंदिर आंदोलन तेज हो गया। सितंबर 1990 को लाल कृष्ण आडवाणी ने सोमनाथ अयोध्या रथ यात्रा शुरू कर दी। यात्रा ने राम जन्मभूमि आंदोलन को और धार दे दी। नफे नुकसान का अनुमान लगाकर नेताओं ने अपने अपने दांव चले। बिहार में लालू प्रसाद यादव ने लाल कृष्ण आडवाणी को गिरफ्तार कर लिया। अयोध्या में कारसेवकों का नरसंहार हुआ। जिसके बाद केंद्र में सत्ता परिवर्तन हो गया। भाजपा के समर्थन से बनी जनता दल की सरकार गिर गई। कांग्रेस के समर्थन से चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बने। ये सरकार भी ज्यादा नहीं चली। नए सिरे से चुनाव हुए और एक बार फिर केंद्र में कांग्रेस सत्ता में आई। इन सब के बीच आई वो ऐतिहासिक तारीख जिसका जिक्र किए बिना ये किस्सा पूरा नहीं हो सकता है।

2024: भव्य मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा

134 साल चली कानूनी लड़ाई के बाद अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण हुआ। राम जन्मभूमि पर मंदिर में रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हुई। अपने आराध्य राम के दर्शन पूजन का सौभाग्य अब सभी भक्तों को मिल रहा है। सदियों के संघर्ष और तप की बुनियाद पर बना राम मंदिर भारतीय जनमानस के लिए प्रेरणा का नया केंद्र है।

संदीप ओझा,
संपादक

रामलला का विग्रह, ऐश्वर्य से जगमग और भक्ति से ओत प्रोत

रामलला का विग्रह कर्नाटक के तुंगभद्रा नदी के काले पत्थर से बना है। मूर्ति अद्भुत,अपूर्व , मनोहरी है। भगवान का रूप, तेज, आभा, प्रकाश, माधुर्य मनमोहक है। मस्तक पर लाल कौस्तुभ मणि। पैरों में पैंजनी, कर-कमलों में पहुँची और गले में मनोहर मणिमाला है। करोड़ों के स्वर्णआभूषण से सजी रामलला की मूर्ति लगता है अभी बोल उठेगी। रामलला का ये रूप हर भारतीय के मन प्राण में बस जाने वाला है। जिस धूम धाम से की राम लला की प्राण प्रतिष्ठा की गई उसकी भी किसी ने कल्पना नहीं की थी। आइये जानते हैं रामलला की मूर्ति की सभी विशेषताएं...

रामलला का सौंदर्य

भगवान राम के बाल रूप की मूर्ति को गर्भ गृह में स्थापित किया गया है। रामलला माथे पर तिलक लगाए बेहद सौम्य मुद्रा में दिख रहे हैं। आभूषण और वस्त्रों से सुसज्जित रामलला के चेहरे पर भक्तों का मन मोह लेने वाली मुस्कान दिखाई दे रही है। कानों में कुंडल तो पैरों में कड़े पहने हुए हैं। मूर्ति के नीचे आभामंडल में चारों भाइयों राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न की छोटी-छोटी मूर्तियों की पूजा की गई है। श्रीराम जन्मभूमि न्यास ने विस्तार से 16 दिव्य आभूषणों के बारे में विस्तार से जानकारी दी है।

राम लला के शीष पर मुकुट या किरीट

न्यास ने बताया कि रामलला के शीश पर विराजित मुकुट या किरीट उत्तर भारतीय परम्परा में स्वर्ण निर्मित है। इसमें माणिक्य, पन्ना और हीरों से अलंकरण किया गया है। मुकुट के ठीक मध्य में भगवान सूर्य अंकित हैं। मुकुट के दायीं ओर मोतियों की लड़ियां पिरोई गयी हैं।

कुण्डल

मुकुट या किरीट की तरह ही भगवान के कर्ण-आभूषण बनाये गये हैं। इनमें मयूर आकृतियां बनी हैं। राम लला के कुण्डल सोने, हीरे, माणिक्य और पन्ने से सुशोभित हैं।

कण्ठा

राम लला के गले में अर्द्धचन्द्राकार रत्नों से जड़ित कण्ठा सुशोभित है। इसमें मंगल का विधान रचते पुष्प अर्पित हैं। बीच में सूर्य देव बनाए गए हैं। सोने से बना हुआ कण्ठा हीरे, माणिक्य और पन्नों से जड़ा है। कण्ठे के नीचे पन्ने की लड़ियां लगाई गयी हैं।

कौस्तुभमणि

यह दिव्य आभूषण भगवान श्रीराम के हृदय में धारण कराया गया है। इस दुर्लभ आभूषण को बड़े माणिक्य और हीरों के अलंकरण से सजाया गया है। यह शास्त्र-विधान है कि भगवान विष्णु और उनके अवतार हृदय में कौस्तुभमणि धारण करते हैं। इसलिए इसे धारण कराया गया है।

पदिक

कण्ठ से नीचे तथा नाभिकमल से ऊपर पहनाए गए आभूषण को पदिक कहा जाता है। विद्वानों की राय में देवताओं के शृंगार और अलंकरण में इसका विशेष महत्त्व होता है। रामलला ने जो पदिक पांच लड़ियों वाला हीरे और पन्ने से जड़ित पंचलड़ा या पदिक धारण किया है, इसके नीचे एक बड़ा सा अलंकृत पेण्डेंट भी लगाया गया है।

वैजयन्ती या विजयमाल

भगवान श्रीराम के बालस्वरूप को वैजयन्ती या विजयमाल से भी सजाया गया है। यह स्वर्ण निर्मित हार भगवान को पहनाया जाने वाला तीसरा और सबसे लम्बा है। इसमें कहीं-कहीं माणिक्य लगाये गये हैं। इसे विजय के प्रतीक के रूप में पहनाया जाता है। इसमें वैष्णव परम्परा के समस्त मंगल-चिह्न- सुदर्शन चक्र, पद्मपुष्प, शंख और मंगल-कलश दर्शाया गया है। इसमें पांच प्रकार के देवता को प्रिय पुष्पों का भी अलंकरण किया गया है। पांच फूलों में- कमल, चम्पा, पारिजात, कुन्द और तुलसी हैं।

कमर में कांची या करधनी

भगवान श्रीराम के बाल स्वरूप को कमर में करधनी धारण करायी गयी है। इस रत्नजडित करधनी को सोने से तैयार किया गया है। इसमें प्राकृतिक सुषमा का अंकन है। हीरे, माणिक्य, मोतियों और पन्ने से अलंकृत इस आभूषण से पवित्रता का बोध होता है। छोटी-छोटी पांच घण्टियां भी इसमें लगाई गई हैं। इन घण्टियों से मोती, माणिक्य और पन्ने की लड़ियों भी लटक रही हैं।

भुजबन्ध या अंगद

आजानुबाहु कहे जाने वाले प्रभु श्रीराम के हाथ घुटने तक लंबे हैं। बाल स्वरूप भगवान की दोनों भुजाओं में स्वर्ण और रत्नों से जड़ित दिव्य भुजबन्ध पहनाये गए हैं।

कंकण / कंगन

प्रभु श्रीराम के दोनों ही हाथों में रत्नजडित सुन्दर कंगन पहनाये गए हैं।

मुद्रिका

प्रभु श्रीम राम के बाएं और दाएं दोनों हाथों की मुद्रिकाएं (अंगूठी) रत्नजडित हैं। दोनों सुशोभित मुद्रिकाओं से मोतियां भी लटक रही हैं।

पैरों में छड़ा और पैजनियां

रामलला के चरणों में छड़ा और पैजनियां पहनाये गये हैं। साथ ही स्वर्ण की पैजनियां भी पहनाई गई है।

भगवान के बाएं हाथ

रामलला के बाएं हाथ में स्वर्ण धनुष है। इनमें मोती, माणिक्य और पन्ने की लटकनें लगी हैं। इसी तरह दाहिने हाथ में स्वर्ण बाण धारण कराया गया है।

भगवान के गले में

प्रभु श्रीराम के इस अलौकिक स्वरूप में रंग-बिरंगे फूलों की आकृतियों वाली वनमाला धारण करायी गयी है। इसका निर्माण हस्तशिल्प के लिए समर्पित संस्था- शिल्पमंजरी ने किया है।

भगवान के मस्तक पर

प्रभु श्रीराम के मस्तक पर पारम्परिक मंगल-तिलक देखा जा सकता है। हीरे और माणिक्य से रचे तिलक से इनका स्वरूप और अलौकिक हो गया है।

भगवान के चरणों के नीचे

प्रभु श्रीराम के चरणों के नीचे कमल सुसज्जित है। इसके नीचे एक स्वर्णमाला सजाई गई है। इसके अलावा भगवान के प्रभा-मण्डल के ऊपर स्वर्ण का छत्र लगा है।

बालस्वरूप राम लला के लिए चांदी के खिलौने

न्यास ने बताया कि अयोध्या के राम मंदिर में पांच वर्ष के बालक-रूप में श्रीरामलला विराजे हैं, इसलिए पारम्परिक ढंग से उनके सम्मुख खेलने के लिए चांदी से निर्मित खिलौने भी रखे गये हैं। खिलौनों में झुनझुना, हाथी, घोड़ा, ऊंट, खिलौनागाड़ी और लट्टू शामिल हैं।

मूर्ति करीब 200 किलोग्राम वजनी तो ऊंचाई 4.24 फीट। मूर्ति की विशेषताएं देखें तो इसमें कई तरह की खूबियां हैं। मूर्ति श्याम शिला से बनाई गई है जिसकी आयु हजारों साल होती है। मूर्ति को जल से कोई नुकसान नहीं होगा। चंदन, रोली आदि लगाने से भी मूर्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। मूर्ति का वजन करीब 200 किलोग्राम है। इसकी कुल ऊंचाई 4.24 फीट, जबकि चौड़ाई तीन फीट है। कमल दल पर खड़ी मुद्रा में मूर्ति, हाथ में तीर और धनुष है। कृष्ण शैली में मूर्ति बनाई गई है।

और क्या खास है?

मूर्ति के ऊपर स्वास्तिक, ॐ, चक्र, गदा, सूर्य भगवान विराजमान हैं। रामलला के चारों ओर आभामंडल है। श्रीराम की भुजाएं घुटनों तक लंबी हैं। मस्तक सुंदर, आंखें बड़ी और ललाट भव्य है। भगवान राम का दाहिना हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में है। मूर्ति में भगवान विष्णु के 10 अवतार दिखाई दे रहे हैं। मूर्ति नीचे एक ओर भगवान राम के अनन्य भक्त हनुमान जी तो दूसरी ओर गरुड़ जी को उकेरा गया है।

मूर्ति में पांच साल के बच्चे की बाल सुलभ कोमलता झलक रही है। मूर्ति को मूर्तिकार अरुण योगीराज ने बनाया है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के अधिकारियों का कहना था कि जिस मूर्ति का चयन हुआ उसमें बालत्व, देवत्व और एक राजकुमार तीनों की छवि दिखाई दे रही है।

कैसे हुआ चयन

अयोध्या के श्रीराम मंदिर में तीन मूर्तियों को स्थापित किया जाएगा, जिसमें से एक मूर्ति को गर्भगृह में स्थापित किया जाएगा। इनके बनने के बाद सबसे बड़ा सवाल तो यह था कि गर्भ गृह में किस रूप में राम लला विराजमान होंगे। मूर्तिकारों ने तीनों मूर्तियों को इतना सुंदर बनाया कि चयन करना कठिन हो रहा था कौन सी सुंदर है और कौन सी उतनी नहीं है। अंततः बाल रूप वाली मूर्ति को राम मंदिर के गर्भ गृह में विराजने का फैसला लिया गया।

अरुण योगीराज को जानिए

जन्मस्थान पर रामलला के जिस विग्रह को स्थापित किया गया उसे अरुण योगीराज ने बनाया है। योगीराज के परिवार में मूर्ति निर्माण का काम कई पीढियों से से किया जाता है। अरुण मैसूर के प्रसिद्ध मूर्तिकारों की पांच पीढ़ियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि से आते हैं। अरुण योगीराज ने देश की तमाम बहुचर्चित प्रतिमाएं बनाई हैं। जिनमें केदारनाथ धाम में स्थापित आदि शंकराचार्य की प्रतिमा और दिल्ली में कर्तव्यपथ पर स्थापित नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा है। पीएम मोदी अरुण योगीराज की कला की प्रशंसा कई बार कर चुके हैं।

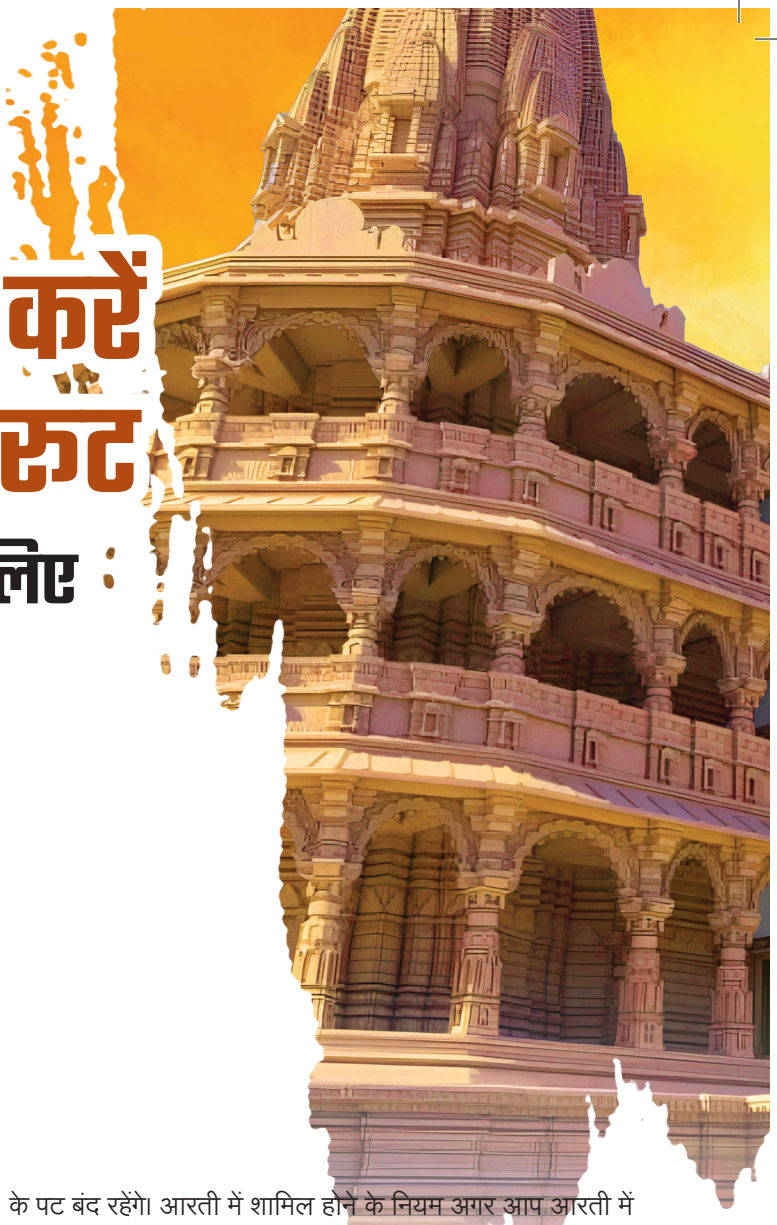

अयोध्या में कैसे करें दर्शन, यहां देखें रूट

अयोध्या गाइड, जो आपके लिए जानना जरूरी है

22 जनवरी 2024 को अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हो चुकी है। अगर आप भी अयोध्या जाने का प्लान कर रहे हैं तो NOW NOIDA UPDATE की इस अयोध्या गाइड में आपको मिलेगी संपूर्ण जानकारी। इसमें वो सभी जानकारियां संकलित की गई हैं, जो अयोध्या पहुंचने से लेकर शहर में घूमने तक में मददगार साबित होंगी।

राम मंदिर दर्शन राम मंदिर कब खुलता है?

सुबह- 6.30 से दोपहर 12.00 बजे तक दोपहर- 2.30 से रात 10.00 बजे तक

कैसे करें दर्शन?

मुख्य प्रवेश द्वार से मंदिर की दूरी करीब 200 मीटर है। यहां से मंदिर तक पहुंचने के लिए बुजुर्गों और विकलांगों के लिए व्हीलचेअर की सुविधा है। मंदिर में आपको सिंह द्वार होते हुए 32 सीढ़ी चढ़कर राम मंदिर में प्रवेश मिलेगा। इसके बाद आप पांच मंडप पार करके गर्भ गृह में रामलला के दर्शन 30 फीट दूरी से कर पाएंगे।

रामलला की आरती का समय?

मंगला आरती - सुबह 4.30 बजे
श्रृंगार आरती - सुबह 6.30 से 7.00 बजे
भोग आरती - 11.30 बजे
मध्यान्ह आरती - दोपहर 2.30 बजे
संध्या आरती - शाम 6.30 बजे
शयन आरती - रात 8.30 से 9.00 बजे

रामलला के वीआईपी दर्शन और मंगला व श्रृंगार आरती के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर क्◌ेथ षेत्र ट्रस्ट ने अभी कोई व्यवस्था घोषित नहीं की है। शृंगार, भोग और संध्या आरती में भक्त शामिल हो सकें गे। भगवान दिन में ढाई घंटे (दोपहर 12 से ढाई बजे तक) विश्राम करेंगे। इस दौरान गर्भगृह के पट बंद रहेंगे। आरती में शामिल होने के नियम अगर आप आरती में शामिल होना चाहते हैं तो शामिल होने के नियम भी जानना आपके लिए जरूरी है। आरती में शामिल होने के नियम ट्रस्ट तय कर रहा है। अभी ट्रस्ट द्वारा पास बनाया जाता है। ऑफलाइन पास श्रीराम जन्मभूमि कैंप ऑफिस से बनता है। इसके लिए आईडी प्रूफ देना अनिवार्य होता है।

मंदिर में प्रसाद क्या मिलेगा?

राम मंदिर में भक्तों के लिए प्रसाद की नि:शुल्क व्यवस्था है। प्रसाद में भक्तों को 'इलायची दाने' का प्रसाद दिया जाएगा। यह चीनी और इलायची को मिलाकर बनाया जाता है।

प्रसाद कहां से मिलेगा?

सभी भक्तों को प्रसाद बांटने के लिए मशीन लगाई गई है। ये मशीनें परिसर में दर्शनार्थियों के वापसी के रास्ते पर स्थापित हैं। अभी शुल्क के साथ प्रसाद की कोई व्यवस्था मंदिर में नहीं है। क्या भक्त मंदिर में प्रसाद चढ़ा सकते हैं? भक्त भी विशेष अनुमति से शाकाहारी और शुद्ध मिठाई और मेवे आदि का भोग लगवा सकते हैं। सुरक्षा कारणों से रामलला के मंदिर में भगवान को अर्पित करने के लिए नारियल, फूल माला, श्रृंगार या कोई और चीज भक्त नहीं ले जा सकेंगे।

कैसे पहुंचे अयोध्या?

एयर कनेक्टिविटी

अयोध्या पहुंचने के लिए देश के इन प्रमुख शहरों से फ्लाइट-

शहर	एयर लाइंस	फ्लाइट का समय	अयोध्या पहुंचेगी
दिल्ली	इंडिगो (नियमित)	दिन में 11.55	दोपहर 1.15 पर
दिल्ली	एअर इंडि या एक्स.	सुबह 10 बजे	सुबह 11.20
मुंबई	इंडिगो	दोपहर 12.30 बजे	दोपहर 2.45 बजे
अहमदाबाद	इंडिगो	सुबह 9.10 बजे	सुबह 11 बजे
चेन्नई	स्पाइस जेट 1 फरवरी से	दोपहर 12.40 बजे	दोपहर 3.15 बजे
बेंगलुरू	एअर इंडिया एक्सप्रेस	सुबह 7.30 बजे (बुध) सुबह 8.05 (सोम, गुरु)	सुबह 10 बजे सुबह 10.35 बजे
कोलकाता	एअर इंडिया एक्सप्रेस	दोपहर 12.45 बजे (बुध) 1.25 बजे (सोम और गुरु)	दोपहर 2.30 बजे दोपहर 3.10 बजे

अयोध्या पहुंचने के लिए फरवरी से ये फ्लाइट्स भी शुरू हो रही हैं...

शहर	एयर लाइंस	फ्लाइट का समय	अयोध्या पहुंचेगी
मुंबई	स्पाइसजेट	सुबह 8:20 बजे	सुबह 10:40 बजे 2 फरवरी से हफ्ते में 6 दिन
बेंगलुरू	स्पाइसजेट	सुबह 10:50 बजे	दोपहर 1:30 बजे 2 फरवरी से हफ्ते में 4 दिन
अहमदाबाद	स्पाइसजेट	सुबह 6:00 बजे	सुबह 8:00 बजे 1 फरवरी से
दिल्ली	स्पाइसजेट	सुबह 8:40 बजे	सुबह 10:00 बजे 1 फरवरी से
दरभंगा	स्पाइसजेट	सुबह 11:20 बजे	दोपहर 12:30 बजे 1 फरवरी से
जयपुर	स्पाइसजेट	सुबह 7:30 बजे	सुबह 9:15 बजे 1 फरवरी से
पटना	स्पाइसजेट	दोपहर 2:25 बजे	दोपहर 3:25 बजे 1 फरवरी से
पुणे	आकासा	सुबह 8:50 बजे	दोपहर 12:55 बजे 15 फरवरी से वाया दिल्ली
ग्वालियर	एअर इंडि या एक्स.	सुबह 8:15 बजे	सुबह 11:20 बजे 16 जनवरी से वाया दिल्ली

रेल कनेक्टिविटी

बड़े शहरों से अयोध्या पहुंचने वाली कुछ प्रमुख ट्रेनें और उनका समय-

शहर	ट्रेन का नाम	प्रस्थान	अयोध्या आगमन	हफ्ते में कब
दिल्ली	वंदे भारत एक्स.	6:10 सुबह	2:30 दोपहर	सोम, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि, रवि
दिल्ली	अयोध्या एक्स.	6:20 शाम	7:15 सुबह	रोजाना
दिल्ली	कैफियत एक्स.	8:25 शाम	6:56 सुबह	रोजाना
अमृतसर	सरयू यमुना एक्स.	1:05 दोपहर	8:51 सुबह	सोम, बुध, शनि
अहमदाबाद	साबरमती एक्स.	11:10 रात	4:22 सुबह	सोम, मंगल, गुरु, शनि
जयपुर	मरुधर एक्स.	1:40 दोपहर	4:43 सुबह	सोम, गुरु, शनि
भोपाल	YPR GKP एक्स.	3:35 रात	4:24 दोपहर	शनि
इंदौर	IND B PNBE एक्स	1:55 दोपहर	7.45 सुबह	शनि
मुंबई	साकेत एक्स.	6.00 सुबह	8.00 सुबह	बुध, शनि
कोलकाता	KOAA JAT एक्स	11.45 दोपहर	6.21 सुबह	रोजाना
बेंगलुरु	YPR GKP एक्स	11.40 रात	4.24 दोपहर	बुध

कई विशेष ट्रेन

- रेलवे ने देश के विभि न्न हि स्सों को अयोध्याजी से जोड़ने वाली 1,000 से अधिक विशेष ट्रेनें चलाने की योजना बनाई है। ये ट्रेनें 19 जनवरी से 100 दिनों तक चलाने की योजना है। इन ट्रेनों के बा रे में आप अपने शहरों से पता कर सकते हैं।

- दिल्ली,मुंबई, चेन्नई, बेंगलुरु, पुणे, कोलकाता , नागपुर, लखनऊ, जम्मू और कश्मीर सहित अन्य शहरों से ट्रेन चलाने की योजना है।

सड़क कनेक्टिविटी

अयोध्या के लिए बड़े शहरों से सड़क मार्ग से कनेक्टिविटी इस प्रकार है

सड़क और बस से कने क्टिविटी

सभी बड़े शहरों से अयोध्या सड़क मार्ग से जुड़ी हुई है। यहां आप अपने वाहनों से भी जा सकते हैं और सरकारी व निजी बसों से भी। दिल्ली से अयोध्या के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की UPSRTC की बस सेवा भी उपलब्ध है।

शहर	दूरी कि. मी. में	यात्रा में लगने वाला समय
दिल्ली	688	11 घंटे
मुंबई	1600	38 घंटे
जयपुर	710	13 घंटे
अहमदाबाद	1350	34 घंटे
इंदौर	930	19 घंटे
भोपाल	781	13 घंटे
चण्डीगढ़	914	15 घंटे
रायपुर	782	19 घंटे
रांची	667	20 घंटे
पटना	417	11 घंटे

उत्तरप्रदेश के शहरों से दूरी व यात्रा समय

उत्तरप्रदेश के इन प्रमुख पर्य टन शहरों से भी अयोध्या के लिए टैक्सी और बसें आसानी से उपलब्ध हैं-

शहर	दूरी कि. मी. में	यात्रा में लगने वाला समय
आगरा	468	11 घंटे
लखनऊ	134	2.15 घंटे
गोरखपुर	133	2.15 घंटे
प्रयागराज	167	2.30 घंटे
वाराणसी	218	2.30 घंटे

डॉ. प्रियंका सिंह
प्रो. एमिटी यूनिवर्सिटी नोएडा

शिष्टाचार: आधुनिक युग में नैतिकता की कमी

शिष्ट या सभ्य पुरुषों का आचरण शिष्टाचार कहलाता है। दूसरों के प्रति अच्छा व्यवहार, घर आने वाले का आदर करना, आवभगत करना, बिना द्वेष और नि:स्वार्थ भाव से किया गया सम्मान शिष्टाचार कहलाता है।

शिष्टाचार से जीवन महान् बनता है। हम लघुता सं प्रभुत्ता की ओर, संकीर्ण विचारों से उच्च विचारों की ओर, स्वार्थ से उदार भावनाओं की ओर, अहंकार से नम्रता की ओर, घृणा से प्रेम की ओर जाते हैं। शिष्टाचार का अंकुर बच्चे के हृदय में बचपन से बोया जाता है। छात्र जीवन में यह धीरे-धीरे विकास की ओर अग्रसर होता है।

शिक्षा समाप्त होने पर और समाज में प्रवेश करने पर यह फलवान् होता है। यदि उसका आचरण समाज के लोगों के प्रति घृणा और द्वेष से भरा हुआ है, तो वह तिरस्कृत होता है, साथ ही उन्नति के मार्ग बंद होने प्रारम्भ हो जाते हैं, उच्च स्तर प्राप्त करने की आकाक्षाएं धूमिल हो जाती हैं। इसके विपरीत मधुरभाषी शिष्ट पुरुष अपने आचरण से शत्रु को मित्र बना लेता है। उन्नति के मार्ग स्वत: खुल जाते हैं।

बच्चे का पहले गुरु उसके माता-पिता हैं जो उसे शिस्टाचार का पहला पाठ पढ़ाते हैं। दूसरा पाठ वह विद्यालय में जाकर अपने आचार्य या गुरु से पढ़ता है। ज्ञान के बिना छात्र का जीवन अधूरा है। प्राचीन काल में एकलव्य, कर्ण, उपमन्यू इत्यादि ने गुरु की महिमा और गुरु भक्ति दोनों को अमर कर संसार में गुरु-महत्ता का उदाहरण प्रसूत किया।

विनम्रता शिष्टाचार का लक्षण है। किसी के द्वारा बुलाए जाने पर हाँ जी, नहीं जी, अच्छा जी कहकर उत्तर देना चाहिए। घर आए मेहमानों का मुस्कराकर स्वागत करना उनका अभिवादन करना शिष्टाचार है। रेलगाड़ी या बस में वृद्ध, औरतों, बच्चों को सीट देना, अन्धों को सड़क पार करवाना, दूसरों की बातों में दखल न लेना, रोगी को अस्पताल ले जाना, दूसरों के मामलों में रुचि न लेना, दु:खी व्यक्ति को सान्त्वना देना, कष्ट में मित्र की सहायता करना शिष्टाचार है।शिष्टाचार के विपरीत आचरण जैसे- दूसरों को देखकर अकारण मुस्कराना, दूसरों की बात काटकर अपनी बात कहना, सड़क पर चलते हुए लोगों से गाली-गलौच करना, लड़कियों को छेड़ना, उन्हें आँख फाड़कर देखना, दुर्घटना से घायल हुए व्यक्ति को वहीं छोड़कर आगे बढ़ जाना, पर निन्दा में रुचि रखना अशिष्टता है। समाज, धर्म, पुस्तकालय, विद्यालय, सरकारी संस्थाएं और व्यक्तिगत संस्थाएं इनके अपने-अपने नियम होते हैं। जैसे मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में जूते पहनकर जाना मना है, हमें यहाँ पर उन नियमों का पालन करना चाहिए। पुस्तकालय में जाकर जोर से बोलना, पुस्तकें फाड़ना, उन्हें देर से वापिस करना शिष्टाचार के विरूद्ध है।

आधुनिक युग में नैतिकता की कमी होती जा रही है। अनैतिकता बढ़ने के कारण शिष्टाचार में कमी आ रही है। जैसे-जैसे इंटरनेट व सोशल मीडिया

का प्रभाव बढ़ रहा है वैसे-वैसे हम नैतिकता को भूल रहे हैं। सोशल मीडिया का प्रयोग गलत नहीं है। यह हमारे ज्ञान के स्तर को बढ़ाता है, लेकिन आज कुछ बच्चे इसका गलत प्रयोग कर अपने संस्कारों को भूल रहे हैं। आजकल बच्चे बड़ों का आदर करना भूल रहे हैं। संस्कार, नैतिकता व शिष्टाचार सभी आज विलुप्त होने लग गए हैं।

पुराने समय में हम देखें तो नैतिक मूल्यों या शिष्टाचार की शिक्षा के लिए कोई विशेष विषय का प्रबंध नहीं था और यूं इसकी हमें जरूरत ही नहीं थी। यह सब तो बच्चा पारिवारिक माहौल में ही सीखता था। पहले संयुक्त परिवार की प्रथा थी, जिसमें सभी साथ रहते थे। बड़ों का लिहाज व सम्मान करना वहीं सीखते थे, लेकिन आज हर कोई छोटे परिवार में रहना चाह रहा है। इससे हम अपने बच्चों को संस्कार व नैतिक मूल्यों की शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं। स्वयं हम अपने बच्चों को समझा ही नहीं पा रहे हैं कि नैतिकता, शिष्टाचार व संस्कार क्या होते हैं। इन सबको बताने का हमारे पास ही समय नहीं है।

शिष्टाचार समाज में सही और गलत व्यवहार की व्याख्या करते हैं. ठीक इसी प्रकार इंटरनेट पर भी उचित आचरण के लिए कुछ नियमों, दिशा निर्देशों का पालन किया जाता हैं. इन्हें Netiquettes (नेटाचार) कहा जाता है।

Netiquette का पूरा नाम Net Etiquette अथवा Internet Etiquette होता हैं. यह ऑनलान व्यवहार के नियमों का संकलन हैं और सभी नेटीजन (Netizens) के लिए समान रूप से लागु होता है.

इंटरनेट भी हम इंसानों द्वारा बनाया गया है, और हम इंसान ही इसका उपयोग करते हैं. इसलिए नेटलोक पर भी अनुशासन बनाए रखना हमारा सामूहिक कर्त्वय बनता है.

और हम सबको वेब फॉर्म, ग्रूप, वेबसाईट कमेंट, सोशल मीडिया पोस्ट, कमेंट, ईमेल आदि पर इन इंटरनेट शिष्टाचार को व्यवहार में लाना चाहिए.

यदि हम इंटरनेट पर भी अनुशासित भाषा, संयमित आचरण और दूसरों के प्रति कृतज्ञता रखते हुए उपयोग करेंगे तो हम एक बेहतर नेटीजन बन सकते हैं. और सभी के लिए एक खुशनुमा इंटरनेट अनुभव सुनिश्चित कर सकते हैं.

इंटरनेट पर उचित व्यवहार के कोई आधिकारिक नियम या दिशा-निर्देश नहीं हैं, लेकिन, समय के साथ कुछ सामान्य बातें जरूर अपनाई जा रहीं हैं. जिनका पालन हम सभी को करने की सलाह दी जाती हैं और हमें अपनाना भी चाहिए.

पहले संयुक्त परिवार की प्रथा थी, जिसमें सभी साथ रहते थे। बड़ों का लिहाज व सम्मान करना वहीं सीखते थे, लेकिन आज हर कोई छोटे परिवार में रहना चाह रहा है। इससे हम अपने बच्चों को संस्कार व नैतिक मूल्यों की शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं

BASICS NETIQUETTES

REPLYING NETIQUETTES

SENDING NETIQUETTES

CONFIDENTIALLY NETIQUETTES

1. Basic Netiquettes

बेसिक नेटाचार में वे सभी नियम शामिल हैं. जिनका पालन हम इंटरनेट से इतर भी करते हैं.

मदद करें: नये लोगों की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहें. उनके द्वारा भेजे गए Emails, Comments, Questions पर जरूर अपनी उचित प्रतिक्रिया दें. क्योंकि वे अभी नेटलोक में नए है और उन्हे आपकी जरूरत हैं.

संयमित रहें: किसी के बारे में अपशिष्ट शब्द, गाली-गलौच तथा असहनीय बात ना करें. यदि आप उनकी बात से सहमत नही हैं. तो अपनी असहमती दर्शाते समय कठोर शब्दों का उपयोग ना करें. और बहस करने से बचे.

उपलब्ध जानकारी देंख लें: वेब फॉर्म, सवाल-जवाब मेंचतथा नय सोशल मीडिया मंच पर मदद मांगने से पहले उपलब्ध टिप्पणियाँ जरुर पढें. क्योंकि आपकी समस्या का हल यहाँ मिल सकता हैं.

एक बार गूगल कर लें: किसी से निजी तौर पर सहायता मांगने के लिए ईमेल या मैसेज भेजने से पहले गूगल करना समझदारी होगी.

FAQs पढें: किसी खास उत्पाद, सेवा आदि के बारे कुछ शंका है या कोई सवाल है. तब पहले इस उत्पाद/सेवा से जुडे हुए सामान्य सवाल-जवाब (FAQs) पढ लें. सीधे अपना सवाल ना पूछे क्योंकि आपके मन में आने वाले लगभग सभी सामान्य सवालों के जवाब यहाँ पहले ही दे दिए जाते हैं.

मानक भाषा: इंटरनेट पर आपके शब्द ही आपके बारें में बता रहे होते हैं. इसलिए लिखते समय मानक लिपि का ही उपयोग करें. सही और प्रचलित शब्दों में अपनी बात कहने की कोशिश करें. और व्याकरण संबंधी छोटी-मोटी अशुद्धियों के लिए अपने मैसेज को जरुर जांचले.

वेब फॉर्म, सवाल-जवाब मेंचतथा नय सोशल मीडिया मंच पर मदद मांगने से पहले उपलब्ध टिप्पणियाँ जरुर पढें. क्योंकि आपकी समस्या का हल यहाँ मिल सकता हैं

सम्मान करें: दुसरे लोगों का सम्मान करें और उन्हे आदर सूचक शब्दों के साथ संबोधित करना अपना नियम बना लें. जैसे; माननीय, सम्माननीय, श्रीमान, जी, नमस्कार, नमस्ते आदि.

कृतज्ञ बनें: जब आपकी कोई मदद करें तो उन्हे "शुक्रिया" कहना ना भूले. और हो सके तो आप भी उनके लिए एक मदद करने की कोशिश जरूर करें. और अपनी गलती स्वीकार करने में पीठ ना दिखाए. उसे आगे बढकर स्वीकर करें तथा सुधारने के लिए काम करें.

लघुरुप नियम: इंटरनेट पर बात करते समय शब्दों के लघुरूप (Abbreviations) बहुत ज्यादा इस्तेमाल किए जाते हैं. मगर, हर कोई इनके बारे में नही जानता है. इसलिए ज्यादा प्रचलित लघुरूपों को ही अपने संदेश में शामिल करें.नही तो आपका मैसेज नए पाठकों को उलझा सकता हैं.

स्माईली का उपयोग: स्माईली एक मुस्कराता मानवीयचेहरे का स्टाईलिश ग्राफिक हैं. जिसका उपयोग हम भावनाएं दर्शाने के लिए करते हैं. इनका उपयोग भी सीमित मात्रा में ही करें. क्योंकि हर कोई चेहरे पढने में माहिर नही होता

2. Sending Netiquettes

ये नेटाचार लेखन से संबंधित हैं. और Emails, Newsgroups, Messages आदि से जुडें हैं. इन्हे मुख्य रूप से Email Etiquettes माना गया हैं. क्योंकि अधिकतर नियम ईमेल के लिए ही बनाए गए है. मगर आप इन्हे किसी भी प्रकार के वेब लेखन पर लागु कर सकते हैं.

छोटा सन्देश लिखें. अगर आप ज्यादा बडा ईमेल लिखकर लोगों को भेजेंगे तो इसे वे अनदेखा कर देंगे. इसलिए अपनी बात कम से कम शब्दों में बयां करें.

व्याकरण संबंधी त्रुटियों से परहेज करें और मानक भाषा में लिखने की कोशिश करें. नहीं तो

हिंदी की बिंदी आपको कहीं भी शर्मिंदा करा सकती हैं.

संदेश लिखते समय उचित खाली जगह (White Space) रखें. और एक पैराग्राफ से दूसरे पैराग्राफ के बीच कम से कम एक खाली लाईन जरूर दें. ताकि पाठक को सांस लेने का समय मिलता रहें. और उसे आपके मैसेज को पढते समय कोई तकलीफ महसूस नही हो.

URLs को हमेशा नई लाईन में कुछ हाशिया देकर लिखना आपके मैसेज को ज्यादा साफ और पठनीय बना देता हैं.

“शीर्षक” में अपने मैसेज का सारांश बताने का प्रयास करें. ताकि लोग आपके संदेश के बारे में अनुमान लगा सके कि इस संदेश में उनके लिए क्या हैं? इससे उन्हे निर्णय लेने में आसानी रहती हैं. जैसे; “किताब” और “इतिहास की किताब चाहिए” दोनों में से बाद वाला शीर्षक ज्यादा वर्णात्मक हैं.

विषय के अनुसार ही अपना संदेश तैयार करें. यदि आप मुद्दे से हटके लिखेंगे तो आपकी बात का प्रभाव नही होगा. इसलिए केवल मुद्दे की बात ही करें. ताकि लोग आपका उद्देश्य समझ सके.

Email Attachments का आकार कम से कम रखें और उचित फाईल फोरमेट में ही अपना दस्तावेज संलग्न करें.

ईमेल के अंत में अपना नाम और हस्ताक्षर जरूर करें.

अपनी Business E-mail ID या दफ्तर वाली ईमेल आईडी से कभी भी निजी मैसेज ना भेंजे.

आवश्यक लोगों को ही CC और BCC में शामिल करें. अपने सभी Contacts को अंधा-धूंध अपना मैसेज भेजने की नादानी ना करें.

3. Replying Netiquettes

यह भी ईमेल से संबंधित है. और ईमेल का जवाब देने से संबंधित सही आचरण के बारें में बताते हैं. लेकिन, इन्हे आप वेब फॉर्म, कमेंट, सवाल-जवाब मंच आदि के लिए भी अपना सकते हैं.

केवल जवाब चाहने वाले और आपकी विषय में रुची रखने वालों को ही जवाब दें. क्योंकि सभी लोग आपकी बात सुनने के लिए तैयार नही हैं. और ना ही सुनना चाहते हैं.

बहुत जरुरी होने पर ही दूसरों का मैसेज फॉर्वार्ड करें. अन्यथा बिल्कुल ना करें. यदि आप किसी मैसेज को फॉर्वार्ड करते है तो इसका मतलब है कि आप इस मेल में लिखें विचारों पर अपनी सहमती दें रहे हैं.

यदि कोई जरूरी मेल हैं तो उसे समय से पहले से जवाब देकर आश्वासित कर दें आपको मेल प्राप्त हो चुका हैं. इसे Acknowledgement कहा जाता हैं.

वेब फॉर्म तथा फेसबुक, ट्वीटरतथा नय सोशल मीडिया मंच पर कमेंटों का जवाब देने से पहले अपनी बात को अच्छी तरह से परख लें. और शिष्ट एवं संयमित भाषा में अपना जवाब दें.

किसी के बारे में अपशिष्ट शब्द ना कहें और हास्यात्मक टिप्पणी करते समय भाषाई मर्यादा का ख्याल करें.

यदि आपको किसी व्यक्ति की बात नापसंद हैं, बेकार लग रही हैं या समझ नही आ रही हैं. तो उसका मजाक ना बनाए और उसे Troll करने के लिए अपना कमेंट ना करें.

4. Privacy Netiquettes

- इंटरनेट पर निजता से संबंधित नेटाचार का पालन करना बहुत जरुरी हैं. और अब तो यह कानून भी बन चुका हैं. इसलिए दूसरों की निजता का सम्मान तथा सुरक्षा करना आपकी जिम्मेदारी हैं.

वेब फॉर्म तथा फेसबुक, ट्वीटरतथा नय सोशल मीडिया मंच पर कमेंटों का जवाब देने से पहले अपनी बात को अच्छी तरह से परख लें. और शिष्ट एवं संयमित भाषा में अपना जवाब दें

- बिना पूछे किसी भी व्यक्ति की Email ID, Photos, Videos या अन्य निजी जानकारी पब्लिक ना करें.
- जिस ईमेल को या अन्य प्राप्त जानकारी जिसे आपने जांचा नही हैं. उसे फॉर्वार्ड ना करें.
- इंटरनेट पर चोरी करना बहुत आसान है. और आपको इंटरनेट पुलिस भी पकडने नही आ रही हैं. लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि आप दूसरों की मेहनत का श्रेय अपने आपको देते रहे. जब भी आप किसी की फोटो, विडियो, ग्राफिक, एनिमेशन, ओडियो, या शब्द आदि का इस्तेमाल करें तो इसके मालिक को उचित क्रेडिट देना ना भूलें.
- कभी भी दूसरे के मैसेज को संपादित ना करें.
- अपनी निजता का भी नजर रखें. और एक सीमा तक ही अपनी निजी जानकारी दूसरों के साथ साझा करें.

डॉ ऋषि कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
आई एम एस गाजियाबाद

पर्यावरण: जागरूकता और संरक्षण

पर्यावरण जागरूकता आज के समय का एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जो मानव समाज को पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में जागरूक करता है। सभ्यता के आरंभ से ही पर्यावरण संरक्षण मनुष्य के लिए चिंता का विषय रहा है। ये मुद्दा आम जन मानस को पर्यावरणीय खतरे की ओर ध्यान आकर्षित करने के साथ साथ ये भी सुनिश्चित करता है कि मानव गतिविधि से प्राकृतिक संसाधन क्षतिग्रस्त या नष्ट न हों, यह पर्यावरणवाद के केंद्र में है।

आजकल के तेजी से बढ़ते औद्योगीकरण, वन्य जन्य उपयोग और अनवांछित पर्यावरणीय परिवर्तन के चलते हमारे प्राकृतिक संसाधनों को काफी हानि हो रही है। इसके परिणामस्वरूप, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, और अन्य जीवन क्षेत्रों में बढ़ते खतरे हैं जो हमारे और आने वाली पीढ़ियों के लिए संशय पैदा करते हैं। हालिया वर्षों में हो रहे निरंतर वैश्विक आर्थिक विकास और उसके संलग्न पर्यावरण प्रदूषण, पारिस्थितिकी असंतुलन दुनिया भर के लिये एक आम चिंता का विषय बन गई है।

पर्यावरण की सुरक्षा सतत विकास के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। यह याद रखना जरूरी है कि हमारा ग्रह एक सीमित संसाधन युक्त है, और हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि इसे नुकसान न पहुंचे या नष्ट न करें।

ऐसे कई तरीके हैं जिनसे हम पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं। एक तरीका नवीकरणीय संसाधनों का समझदारी से उपयोग करना है। उदाहरण के लिए, हमें जीवाश्म ईंधन का उपयोग करने के बजाय सूर्य की रोशनी और पवन ऊर्जा जैसे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए, जो वायुमंडल में हानिकारक उत्सर्जन नहीं छोड़ते हैं। और हम अपने कचरे का पुनर्चक्रण करके कम करें। यह एक धीमी किंतु सकारात्मक व कारगर प्रक्रिया है जिसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण सुरक्षा, संरक्षण, और सुधार को सुनिश्चित करना है।

भारत में पर्यावरण संकटों का सामना एक महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण मुद्दा है जो समग्र विकास, सामाजिक स्थिति, और स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। निम्नलिखित कुछ मुख्य पर्यावरण संकट भारत में देखे जा रहे हैं।

भारत में बड़े शहरों में वायु प्रदूषण एक विकराल समस्या बन चुकी है। वाहनों, उद्योगों, और अन्य कारणों से उत्पन्न होने वाले तत्वों के कारण श्वास की समस्याएं उत्पन्न होती हैं। हमारे देश में सॉलिड वेस्ट का प्रबंधन सही से करना अपने आप मे एक बड़ी चुनौती है, अनुसंधान के अभाव के कारण अधिक संग्रहण, अप्रशिक्षित लोग तथा कम उन्नत तकनीक के कारण स्थानीय समुदायों को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता

जब लोग पर्यावरण के महत्व को समझते हैं, तो वे प्राकृतिक संसाधनों का सही ढंग से उपयोग करने के लिए प्रेरित होते हैं और उनकी रक्षा करने के लिए सक्रिय रूप से योजनाएं बनाते हैं

है। भारतीय राजधानी क्षेत्र (DELHI NCR) और उसके आस पास के शहरों में वायु प्रदूषण की समस्या खतरनाक तरीके से बढ़ रही है। पिछले कई सालो से हर साल अक्तुबर से दिसम्बर माह तक सरकार द्वारा वायु प्रदूषण के चलते तरह तरह की चेतावनी जारी करी जाती हैं। जिसमें वाहनों, औद्योगिक क्षेत्रों, किसानों द्वार चलायी जाने वाली प्रणाली और अन्य स्रोतों से निकलने वाले हानिकारक तत्वों के उत्सर्जन के लिये समय समय पर सीमा निर्धारित कर दी जाती है।

कचरे का पर्यावरण असंतुलन के कारण अधिक वर्षा, बाढ़ और बारिश से आने वाली आपदाएं अक्सर जीवन को प्रभावित करती हैं। प्रदूषण तथा इससे उपजी समस्याओं का समाधान करने के लिए समुदाय, सरकार, औद्योगिक सेक्टर और व्यक्तिगत स्तर पर एक सशक्त और संबद्ध पहलू की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने कचरा प्रबंधन को ध्यान में रखते हुए देश भर मे 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया, इसका एक बड़ा पहलू है जिसमें समग्र समाज को साफ और स्वस्थ रखने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत विभिन्न सफाई योजनाएं हैं जैसे कि गंदगी मुक्त गाँव, शौचालय निर्माण, कचरा प्रबंधन के साथ साथ उनकी शिक्षा भी शामिल है।

भारत में जलवायु परिवर्तन और जल संकट का असर बेहद तेजी के साथ महसूस हो रहा है, जिसमें बढ़ता औसत तापमान, अधिक बर्फबारी और अधिक समय तक रहने वाली बरसात जैसी समस्याएं शामिल हैं। इसका सीधा प्रभाव कृषि, जल संचार और समुद्री स्तरों में बढ़ोतरी के साथ देखा जा रहा है। कई क्षेत्रों में जल संकट का सामना हो रहा है, जो कृषि, पानी संसाधन, और जीवों के लिए चुनौतीपूर्ण हैं।

जब लोग पर्यावरण के महत्व को समझते हैं, तो वे प्राकृतिक संसाधनों का सही ढंग से उपयोग करने के लिए प्रेरित होते हैं और उनकी रक्षा करने के लिए सक्रिय रूप से योजनाएं बनाते हैं। इस काम मे सरकारी सहयोग अति आवश्यक है गंगा नदी हिन्दू धर्म में एक जीवन-दायनी पवित्र नदी मानी जाती है और भारत सरकार के द्वारा इसे गंगा सफाई अभियान के माध्यम से स्वच्छ रखने का प्रयास किया गया। इसके लिये

भी कई पहलुओं पर काम किये जाने की जरूरत है फिर भी व्यक्तिगत स्तर पर हमारे देश मे कुछ जुझारू लोग इस देश मे बेहतर करते दिखाई देते हैं उनमें एक नाम है पद्मश्री विजेता जादव मोलाई पयांग उन्होंने असम राज्य मे 1970 से अकेले ही वन और वन्य जीव संरक्षण करते हुए मोलाई जंगल का निर्माण कर दिया जोकि आज अनेक जीवो का घर है। इसी श्रृंखला मे महाराष्ट्र राज्य से बाबा आमटे, कर्नाटक से प्रमोद नारगोलकर और बहु चर्चित सुन्दरलाल बहुगुणा भारत के एक महान पर्यावरण-चिन्तक और चिपको आन्दोलन के प्रमुख नेता थे। सभी ने व्यक्तिगत स्तर पर वन संरक्षण के लिए संघर्ष किया। इसके अलावा सरकारी और गैर सरकारी दोनों के सामूहिक प्रयास से गिर के जंगलों में बब्बर शेरो बढ़ोतरी भी उल्लेखनीय उदाहरण है।

भारतीय संदर्भ में वन्यजीवों की संरक्षण के लिए उच्च अभ्युदय और उद्यम पूर्वक कदम उठाए जा रहे हैं, लेकिन वन्यजीवों के अवैध शिकार और उनके स्थानीय संरक्षण के लिए अभाव के कारण यह एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है

भारत की मोदी सरकार ने 'नमामि गंगे' नामक एक सफाई अभियान भी चलाया था। इस अभियान के अंतर्गत, विभिन्न क्षेत्रों में सफाई के लिए कई पहलुओं पर ध्यान दिया गया, जैसे कि नदी के तटों की सफाई, प्रदूषण नियंत्रण, और जन जागरूकता अभियान। सुधारात्मक कदमों के माध्यम से, जल संरक्षण और नदी सफाई को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया। साथ ही साथ गंगा के सफाई अभियान में स्थानीय लोगों, समुदायों, सरकारी अधिकारियों, और गैर-सरकारी संगठनों को शामिल किया गया। इसका उद्देश्य गंगा को प्रदूषण मुक्त बनाने के साथ-साथ नदी के प्राकृतिक संतुलन को भी बनाए रखना था।

भारतीय संदर्भ में वन्यजीवों की संरक्षण के लिए उच्च अभ्युदय और उद्यम पूर्वक कदम उठाए जा रहे हैं, लेकिन वन्यजीवों के अवैध शिकार और उनके स्थानीय संरक्षण के लिए अभाव के कारण यह एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है और पर्यावरण संकट के चलते भारत में वन्यजीवों का संरक्षण अपने आप में एक गंभीर चुनौती है। कुछ प्रजातियों के तो लुप्त हो जाने की आशंका है। वन्यजीव सुरक्षा अभियान एक बेहतर विकल्प है लेकिन एक लम्बी प्रक्रिया है जो बिना सरकारी योजनाओं व सामाजिक व्यक्तियों के सहयोग के संभव प्रतीत नहीं होता है।

प्रदूषण, वन्यजीव संरक्षण, और सामाजिक परिवर्तन की चुनौतियों के बावजूद, भारत में पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए अभी पर्यावरण जागरूकता के माध्यम से लोग एक दूसरे के साथ मिलकर प्रदूषण, वन्यजीव संरक्षण, और अन्य पर्यावरणीय मुद्दों का समाधान निकाल सकते हैं। इस प्रकार पर्यावरण जागरूकता, सारे समाज को एक साथ मिलाकर एक स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करती है।

आज सरकारी और गैर सरकारी पर्यावरण जागरूकता के बढ़ते प्रसार से लोग अपने कृत्रिम उपभोक्तावाद को कम करने, प्राकृतिक संसाधनों का सही तरीके से प्रबंधन, जल, वायु, और भूमि प्रदूषण को कम करने के लिए सक्षम हो रहे हैं। सरकारी सहयोग व सामूहिक योगदान के चलते जिसका नतीजा आज ये है कि खाद्य और जल जनित रोग जैसे हैजा, कालरा इत्यादि आज करीब करीब विलुप्त हो चुके हैं। कृषि जगत मे संकरण माइक्रो इरिगेशन और टिशू कल्चर इत्यादि की वजह से भारत हर दिशा मे आत्मनिर्भर होने की ओर तेजी से अग्रसर है।

भारत में पर्यावरण जागरूकता को बढ़ाने के लिए सकारात्मक कदम उठाए जा रहे हैं, लेकिन हमें इस पर और भी ध्यान केंद्रित करना होगा। जन जागरूकता को बढ़ाने, सुरक्षित और स्वच्छ पर्यावरण की दिशा में समृद्धि हासिल करने के लिए समर्थन, समझदारी, और सामाजिक सहयोग की आवश्यकता है।

यूनुस आलम,
ब्यूरो चीफ़

मिट्टी में मिला साम्राज्य, शिकंजे में कब आएगा माफिया

नोएडा का बदनाम गैंगस्टर रवि काना पुलिस को कब तक छकाएगा

गैंगरेप का आरोपी। नोएडा का सरिया चोर। गौतम बुद्ध नगर का मोस्ट वॉन्टेड। दर्जन भर मुकदमाधारी। रवि नागर उर्फ रवि काना कहां फरार है। पुलिस कब इस गैंगस्टर तक पहुंच पाएगी। कहना मुश्किल है। लेकिन खुद को डॉन समझने वाले इस कबाड़ माफिया का अवैध साम्राज्य भरभराकर ढह रहा है। क्राइम मास्टर रवि काना की बेनामी संपत्तियों का खुलासा हर गुजरते दिन के साथ होता ही जा रहा है। रवि काना की संपत्तियों पर पुलिस शिकंजा कसने का अभियान चला रही है। पुलिस को स्क्रैप माफिया रवि काना की गोवा में बेनामी संपत्ति रिजॉर्ट और कई क्लब हाउस होने की जानकारी मिली है। इस प्रॉपर्टी में कई चर्चित चेहरे की पार्टनर होने की भी चर्चा है। उन सभी को पुलिस ने निशाने पर लेने की तैयारी कर रही है। उनके जरिए रवि काना तक पहुंचने की कोशिश की जा रही है। नोएडा पुलिस ने रवि काना और उसके गैंग के 16 सदस्यों पर गैंगस्टर की कार्रवाई की है। साथ ही नोएडा जिला प्रशासन ने रवि काना करीब 100 करोड़ की संपत्ति को सील कर दिया है। बीटा दो और इकोटेक एक कोतवाली पुलिस ने रवि काना के ठिकानों पर ताबड़तोड़ दबिश जारी रखी है।

ईकोटेक एक क्षेत्र में करीब 5 करोड़ के स्क्रैप और 30 करोड़ की जमीन सील कर दी गई। वहीं, बिसरख के चेरी काउंटी क्षेत्र में 5000 गज जमीन को सील कर दिया गया है. इसके अलावा 20 खाली ट्रक, दो स्क्रैप से लदे ट्रक जिनकी कीमत करीब 5 करोड़ बताई जा रही है उस पर कार्रवाई की गई है. 200 टन स्क्रैप और 10 लाख का सरिया भी जब्त कर लिया गया है। पुलिस ने 60 बड़ी गाड़ियां भी सील की हैं।

कंस्ट्रक्शन साइट से उतरवा लेता था सारा सामान

रवि काना गैंग के गुर्गे निर्माणाधीन साइटों पर जाने वाले सरिया के ट्रकों को रोककर ड्राइवर से मिलीभगत करके सरिया उतरवा लेते थे। वहीं काना साइट के मैनेजर को डरा धमकाकर स्टाक बुक में पूरा वजन लिखवा लेता था। इसके बाद उतारे गए सरिया को बाजार भाव से अधिक दाम पर बेचकर माफिया मुनाफा कमाता था।

काना पर दर्ज 11 केस

नोएडा की कुख्यात गैंग का भंडा फूटा तो रवि काना पर कुल 11 आपराधिक केस सामने आए। कई केस में रवि की पत्नी मधु और उसकी गर्लफ्रेंड काजल झा भी नामजद हैं। काजल झा गैंगस्टर रवि काना की प्रेमिका और उसके गिरोह की सक्रिय सदस्य है। उनके पास दिल्ली की न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी में 80 करोड़ रुपये का घर है। ग्रेटर नोएडा पुलिस उसके खिलाफ लगातार कार्रवाई कर रही है. काजल झा को रवि काना का दाहिना हाथ माना जाता है. बताया जाता है कि काजल की वजह से रवि काना अपनी पत्नी से झगड़ा करता रहता है। सबसे ज्यादा भरोसेमंद हैं काजल झा उसे गिरोह चलाने के लिए मार्गदर्शन भी देती है। ऐसा माना जाता है कि रवि काना अपने गैंग के सबसे खास लोगों में काजल पर सबसे ज्यादा भरोसा करता है। काजल उन 16 लोगों में शामिल हैं जिन पर गैंगस्टर एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। काजल झा दिल्ली-एनसीआर में खौफ का दूसरा नाम है। उसे नोएडा की लेडी डॉन कहा जाता है। लेकिन पुलिस के एक्शन देख तो यही लग रहा है कि नोएडा का बदनाम गैंगस्टर ज्यादा दिन सुकून से नहीं रह पाएगा।

डॉ शैलेश मिश्रा
पर्यावरणविद्

वायु प्रदूषण जागरूकता ही समस्या का समाधान

हमारे युग के सबसे बड़े संकटों में से एक वायु प्रदूषण है, जिसका न केवल जलवायु परिवर्तन पर प्रभाव पड़ता है, बल्कि बढ़ती रुग्णता और मृत्यु दर के कारण व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। ऐसे कई प्रदूषक हैं जो मनुष्यों में बीमारियों के प्रमुख कारक हैं। उनमें से, पार्टिकुलेट मैटर (पीएम), परिवर्तनशील लेकिन बहुत छोटे व्यास के कण, साँस के माध्यम से श्वसन प्रणाली में प्रवेश करते हैं, जिससे श्वसन और हृदय संबंधी रोग, प्रजनन और केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की शिथिलता और कैंसर होता है। इस तथ्य के बावजूद कि समताप मंडल में ओजोन पराबैंगनी विकिरण के खिलाफ एक सुरक्षात्मक भूमिका निभाता है, जमीनी स्तर पर उच्च सांद्रता में यह हानिकारक होता है, श्वसन और हृदय प्रणाली को भी प्रभावित करता है। इसके अलावा विषाक्त भाग में, कार्बन डाइऑक्साइड नाइट्रोजन ऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, बेंजीन, वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (वीओसी), डाइऑक्सिन और पॉलीसाइक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन (पीएएच) सभी वायु प्रदूषक माने जाते हैं जो मनुष्यों के लिए हानिकारक हैं। उच्च स्तर पर साँस लेने पर कार्बन मोनोऑक्साइड सीधे विषाक्तता को भी भड़का सकता है। सीसा जैसी भारी धातुएं, जब मानव शरीर में अवशोषित हो जाती हैं, तो जोखिम के आधार पर, सीधे विषाक्तता या क्रोनिक नशा का कारण बन सकती हैं। उपरोक्त पदार्थों से होने वाली बीमारियों में मुख्य रूप से श्वसन संबंधी समस्याएं जैसे क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी), अस्थमा, ब्रोंकियोलाइटिस, और फेफड़ों का कैंसर, हृदय संबंधी घटनाएं, केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की शिथिलता और त्वचीय रोग शामिल हैं। अंतिम लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि पर्यावरण प्रदूषण के परिणामस्वरूप होने वाला जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक आपदाओं की तरह ही कई संक्रामक रोगों के भौगोलिक वितरण को प्रभावित करता है।

यदि शब्दों में परिभाषित करें तो प्रदूषण मानव और अन्य जीवों के लिए हानिकारक तत्वों का पर्यावरण में अंतर्विरोध है। प्रदूषक वे हानिकारक पदार्थ हैं, जो पर्यावरण में विभिन्न अवस्थाओं जैसे ठोस, तरल या गैसों में उत्सर्जित हो सकते हैं, जो उचित उपचार न किए जाने पर अंततः हमारे पर्यावरण की गुणवत्ता को कम कर देते हैं।

प्रदूषण मुख्य रूप से बड़े शहरी क्षेत्रों में रहने वालों को प्रभावित करता है, जहां उद्योग और वाहन उत्सर्जन वायु गुणवत्ता में गिरावट में सबसे अधिक योगदान देता है। औद्योगिक प्रदूषण, जहां जहरीले धुएं का कोहरा फैलना और दूषित पानी का निकलना आसपास के क्षेत्रों की आबादी के लिए घातक हो सकता है।

विकासशील देशों में औद्योगीकरण के विकास के साथ-साथ अत्यधिक जनसंख्या और अनियंत्रित शहरीकरण के कारण समस्या अधिक गंभीर है। इससे हवा की गुणवत्ता, पानी और मिट्टी की गुणवत्ता खराब हो जाती

है, खासकर उन देशों में जहां सामाजिक असमानताएं हैं और पर्यावरण के स्थायी प्रबंधन पर जानकारी की कमी है। कम आय के कारण घरेलू जरूरतों के लिए लकड़ी के ईंधन या ठोस ईंधन जैसे ईंधन के उपयोग से लोगों को घर में खराब गुणवत्ता वाली, प्रदूषित हवा का सामना करना पड़ता है। यह ध्यान देने वाली बात है कि देश भर में लाखों लोग अपनी दैनिक हीटिंग और खाना पकाने की जरूरतों के लिए उपरोक्त स्रोतों का उपयोग कर रहे हैं। घर की महिलाओं को घरेलू वायु प्रदूषण के लंबे समय तक संपर्क में रहने के कारण बीमारी विकसित होने का सबसे अधिक खतरा होता है। अपने तेज़ औद्योगिक विकास और अधिक जनसंख्या के कारण, भारत गंभीर वायु प्रदूषण समस्याओं का सामना करने वाले एशियाई देशों में से एक है। भारत में फेफड़ों के कैंसर से होने वाली मृत्यु दर सूक्ष्म कणों से जुड़ी है। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, लंबे समय तक संपर्क में रहने से हृदय प्रणाली पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। भारत में अत्यधिक वायु प्रदूषण दर्ज किया गया है, जहाँ हवा की गुणवत्ता खतरनाक स्तर तक पहुँच जाती है। नई दिल्ली भारत के सबसे प्रदूषित शहरों में से एक है। वायु प्रदूषण से जुड़ी कम दृश्यता के कारण नई दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के अंदर और बाहर उड़ानें अक्सर रद्द कर दी जाती हैं। भारत में स्थानिक विविधता है, क्योंकि विविध जलवायु परिस्थितियों और जनसंख्या और शिक्षा स्तर वाले क्षेत्र अलग-अलग इनडोर वायु गुणवत्ता उत्पन्न करते हैं, दक्षिणी राज्यों (160-214 µg/m3) की तुलना में उत्तर भारतीय राज्यों में उच्च पीएम 2.5 (330-570 µg/m3) देखा गया है। उत्तर भारतीय क्षेत्रों की ठंडी जलवायु इसका मुख्य कारण हो सकती है, क्योंकि दक्षिणी भारत की उष्णकटिबंधीय जलवायु की तुलना में घर पर लंबे समय तक रहना और अधिक ताप आवश्यक है। भारत में घरेलू वायु प्रदूषण प्रमुख स्वास्थ्य प्रभावों से जुड़ा है, खासकर महिलाओं और छोटे बच्चों में, जो लंबे समय तक घर के अंदर रहते हैं। क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव रेस्पिरेटरी डिजीज (CORD) और फेफड़ों का कैंसर ज्यादातर महिलाओं में देखा जाता है, जबकि तीव्र निचली श्वसन बीमारी 5 साल से कम उम्र के छोटे बच्चों में देखी जाती है।

मैंने बेहतर पर्यावरण प्रशासन के विकास के लिए कई पर्यावरण समितियों के साथ विभिन्न सम्मेलनों में भाग लिया है और व्यक्तिगत रूप से तकनीकी प्रगति की क्रमिक प्रगति का अनुभव किया है जिसने पिछले वर्षों में कई संवादों की तैनाती शुरू की है। इसके अलावा कई पर्यावरणीय राजनीति भी बनाई और पेश की गई हैं। विभिन्न पैनल सदस्यों, वैज्ञानिकों, मीडिया और सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के बीच आपत्तियां और विरोध के बिंदु। उग्र पर्यावरण सक्रियता क्रियाएँ और आंदोलन बनाए गए हैं। नई सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों के उदय की कई बार जांच की गई है कि क्या और किस तरह से उन्होंने संचार के साधनों और सक्रियता जैसे सामाजिक आंदोलनों को प्रभावित किया है। 2014 में मैंने **"पृथ्वी ही एकमात्र धर्म है"** शब्द का प्रयोग तेजी से और कई अलग-अलग विषयों में किया है। आजकल, पर्यावरणीय मुद्दों पर डिजिटल सक्रियता परिणाम उत्पन्न करने के लिए कई डिजिटल तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। जिसका उपयोग पर्यावरण संरक्षण के लिए आम लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए भी किया जा सकता है।

प्रोफेसर शैलेश मिश्रा के अनुसार. वायु प्रदूषण के प्रति लोगों में उचित जागरूकता लाना इस समस्या से निपटने का एकमात्र तरीका है सार्वजनिक जागरूकता के साथ-साथ विशेषज्ञों का बहु-विषयक दृष्टिकोण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को इस खतरे के उद्भव पर ध्यान देना चाहिए और स्थायी समाधान प्रस्तावित करना चाहिए।

प्रोफेसर (डॉ) शैलेश मिश्रा दोहरी डॉक्टरेट के साथ एक निपुण पेशेवर हैं, एक प्रमाणित चार्टर्ड इंजीनियर और फेलो आईईटी हैं, जो पर्यावरण अनुसंधान, नियामक मामलों, सुरक्षा मानकों, ब्रांड समर्थन और सरकारी मामलों में 21 वर्षों से अधिक के अनुभव के साथ सही शोध करने में शामिल हैं। वर्तमान में विभिन्न कॉरपोरेट्स, मंत्रालयों, संगठनों और विश्वविद्यालयों के साथ उच्च स्तर पर जुड़े हुए हैं और उन्होंने विज्ञान और पर्यावरण के क्षेत्र में अपने महान और अभिनव योगदान के लिए कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया, जा चुका है।

डॉ. ऐ.के सिंह
प्रोफेसर, पतांजलि
विश्वविद्यालय, हरिद्वार

भू-संपदा (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016 उत्तर प्रदेश मे इसकी यथार्थतता भाग 2

जैसा कि भाग 1 में वर्णित किया गया कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा रेरा अधिनियम को 9 जून 2017 की अधिसूचना के साथ लागू किया गया जो 01 मई 2017 रेगुलेटरी अथॉरिटी के रूप मे यथा-अभिहित की स्वीकृति प्रदान की गई थी।

अधिसूचना के लगभग एक साल बाद दिनांक 4 अगस्त 2018 को योगी सरकार ने इसकी पूर्णकालिक स्थापना की। श्री राजीव कुमार इसके पहले अध्यक्ष बनाए गए। श्रीमती कल्पना मिश्रा, श्री बलविन्दर सिंह व श्री भानु प्रताप सिंह को बेंच का मेंबर बनाया गया। यह सभी लोग रेरा की शिकायतों की सुनवाई जज के रूप मे शुरू की तथा साथ मे (Conciliation Forum) समझौता फोरम का भी गठन किया गया जिसके द्वारा बिल्डर व खरीदारों के बीच बातचीत कर शिकायतों का निराकरण किया जा सके। पूरी कार्यवाही को संपादित करने हेतु श्री अबरार अहमद को सचिव बनाया गया। रेरा सुनवाई हेतु दो पीठ का गठन किया गया पहली पीठ लखनऊ तथा दूसरी पीठ ग्रेटर नोएडा यानी कि एनसीआर मे खोली गई।

सरकार द्वारा बनाए गए इस पूरे संगठनात्मक ढांचे की एक खास बात यह रही की सभी रेखा के अध्यक्ष सहित सभी सदस्य अपनी नौकरी

पूरी करने के बाद न्याय देने के लिए नियुक्त हुए साथ ही इनके भविष्य या करियर पर इनकी सुनवाईयों का और फसलों का कोई असर पड़ने वाला नहीं था। ऐसे जजों पर हजारों निवेशकों की अति प्रतीक्षित न्याय की उम्मीद पर खरा उतरने और न्याय परक सेवा देने की जिम्मेदारी दी गई। यानी कि जो एक्टिव सेवा में रहते हुए न्याय न दे सके ऐसे सेवामुक्त लोग से न्याय की अपेक्षा व उनकी मंशा को आसानी से समझा जा सकता है। इन लोगों मे से कुछ एक पहले इन्हीं प्राधिकरणों में काम कर चुके थे अब उन्ही के हाथो मे हजारो फ्लैट खरीदारों का भविष्य तय करना था।

फिलहाल नव नियुक्त रेरा प्राधिकरण के अध्यक्ष की अध्यक्षता में शिकायत निस्तारण हेतु रेरा एक्ट के नियमो को व्याख्या करते हुए नियमावली के अनुसार निम्न प्रक्रिया रखी जिसमें-

1 प्रमोटर्स के अधिकार व जिम्मेदारी के लिए रेरा एक्ट के सेक्शन 3,4,6,11,12,13, 14,15, 16,17,18 तथा 19 के तहत

2 रियल स्टेट के एजेंट के अधिकार व जिम्मेदारी हेतु सेक्शन 9 और 10

3 खरीदारों के अधिकार व जिम्मेदारी हेतु सेक्शन 19

4 शिकायतों को दर्ज करने हेतु सेक्शन 31

5 प्राधिकरण के अधिकार, सुनवाई, दंड, आदेश व संपादन हेतु सेक्शन 34(f), 35, 36,37, 38,40, 59,60,61,62 और 63

के तहत कार्रवाई जारी की जिसमें लखनऊ बेंच एनसीआर के अलावा सभी जिलों की शिकायतों की सुनवाई तथा ग्रेटर नोएडा बेंच एनसीआर के जिलों की सुनवाई करने के अधिकार को विभाजित किया गया।

रेरा रिपोर्ट के अनुसार पीठ के गठन के समय लगभग 5350 मामलों की शिकायत निवेशकों द्वारा दर्ज कराई जा चुकी थी जिनका निस्तारण अतिशीघ्र करना था। उपर्युक्त प्रक्रिया के तहत बेंच ने सुनवाई शुरू की। शुरुआत में लिए गए निर्णय पीड़ितों को राहत देते दिखाई दिए जिनमे कुछ केस ऐसे थे जिसमे रेरा ने बिल्डर बायर एग्रीमेंट के अनुसार निर्णय दिए तथा जितनी पेनाल्टी बिल्डर बायर्स से लेने का अनुबंध किया था उतनी ही पेनाल्टी बिल्डर द्वारा बायर को देने का निर्णय लिया गया। परंतु समय के साथ बिल्डरो के दबाव व अन्य कारणों से पीठ के निर्णय मे एकरूपता खत्म होती गई और जिस मंशा से या कहे जिस न्याय की आशा मे निवेशक रेरा मे केस दर्ज करते वह मिलना एक दिवी। स्वप्न जैसा रह गया। यही नहीं निर्णयो को बिल्डर धता देने लगे।

बस सुनवाई की प्रक्रिया की एक अच्छी बात यह रही कि प्राधिकरण ने जल्द ही आफलाइन के साथ ऑनलाइन सुनवाई व शिकायत दर्ज कराना रहा है। इससे पीड़ितों को प्राधिकरण मे शिकायत दर्ज कराने से लेकर अन्य प्रक्रियाओं के संपादन मे काफी सहूलियत हुई। रेरा के डेटा के अनुसार अक्टूबर 2019 तक कुल 20321 शिकायते दर्ज हुई जिनमे 13009 शिकायतो का निस्तारण हुआ। इन शिकायतों मे सिर्फ गौतम बुद्ध नगर से लगभग 60% शिकायते दर्ज हुई। रेरा द्वारा उपलब्ध डेटा मे यह कहीं भी वर्णित नही हैं कि 13009 के निर्णय का जमीनी स्तर पर कितना लागू हुआ। अगले कुछ महीनों बाद कोविड 2019 के आ जाने के बाद सुनवाई प्रक्रिया बाधित हो गई। दिए गए निर्णयों का कितने प्रतिशत जमीनी स्तर पर लागू हुआ।

वेबसाइट और और जमीनी हकीकत कुछ और बयां करते है।

अगले अंक में हम जानेंगे रेरा-प्राधिकरण-प्रशासन का खेल

विशेष हनुमानगढ़ी के गद्दीनशीन महंत प्रेमानंद का EXCLUSIVE इंटरव्यू

हनुमानगढ़ी। यानि बजरंगबली का गढ़। मान्यता है कि लंका से लौटने के बाद भगवानराम ने अपने प्रिय भक्त हनुमान को ये जगह रहने के लिए दी थी। इस लिए इसे हनुमानजीका घर भी कहते हैं। अथर्ववेद के अनुसार,भगवान राम ने हनुमान जी को कहा था कि जब भी कोई अयोध्या में मेरे दर्शनकरने आएगा, उससे पहले उसे हनुमानजी के दर्शन करने होंगे। इसलिए आज भी लोग रामलला केदर्शन से पहले हनुमानगढ़ी जाते हैं। हनुमान जी अयोध्या के राजा के रूप मेंविराजमान हैं। लेकिन मौजूदा हनुमानगढ़ीमंदिर का निर्माण 300 साल पहले स्वामी अभयारामदासी जी ने करवाया था। जहां हनुमान जी के दर्शन करने के लिए 76 सीढ़ियां चढ़करजाना होता है। हनुमानगढ़ी में गुप्त पूजा पद्धति बहुत विशेष है। देश में ऐसीपूजा और कहीं नहीं होती। हनुमानगढ़ी में ये परंपरा सर्दियों से चली आ रही है। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ का अयोध्या का दौराअक्सर लगा रहता है। वो जब भी यहां आते सबसे पहले हनुमानगढ़ी में विराजमान हनुमानजी के बाल रूप का दर्शन करते हैं। फिर बाद में राम जन्म भूमि जाकर रामलला कादर्शन करते हैं। ये बात सिर्फ योगी जी के लिए ही नही है। सत्ता से जुड़े हों याफिर हों विरोधी दलों के नेता, सबके लिए आम है। बजरंग बली की इससिद्ध पीठ पर माथा टेकने सब आते हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी भी जब पहली बार 2016में अयोध्या आए तो हनुमानगढ़ी में बाल हनुमान के दर्शन करने पहुंचे।और बगल में ही मौजूद राम जन्म भूमि मंदिर में रामलला के दर्शन किए बगैर ही लौट गए।उस समय सवाल भी उठे थे कि राहुल रामलला के दर्शन करने क्यों नहीं गए? राहुलका उस समय जवाब था, वह विवादित स्थल है। ऐसे तमाम सवालों और हनुमान जी कि किले की रहस्यमय कथाओं को जानने के लिए NOWNOIDA संपादक संदीप ओझा ने बात की हनुमानगढ़ी के गद्दीनशीन महंत प्रेमानंद जी से। इस साक्षात्कार में प्रेमानंद जी ने कई हैरतअंगेज बातें बताई हैं। पढ़िए।

महंत प्रेमानंद: यहां के कथाओं के बारे में कोई वर्णन नहीं कर सकता है, "कोउ कह सके अवध प्रभाउ" जहां पर भगवान ही साक्षात प्रकट हैं, जहां पर उनकी अर्धांगिनी बैठी हुई हैं। भगवान के जितने अवतार हैं, उनमें भगवान राम का अवतार प्रमुख हैं, वो यहां पर बैठे हैं, जितने भगवान के दास हैं, उसमें सर्वश्रेष्ठ बजरंगबली महाराज बैठे हैं, उस अयोध्या के प्रभाव को कौन कह सकते हैं। जिसकी जगह की बढ़ाई भगवान राम ने ही किया है उसकी बड़ाई इंसान क्या कर सकता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जब रावण पर विजय प्राप्त कर अयोध्या लौटे थे, तब से कहते हैं कि हनुमान जी यहीं पर रहने लगे। कहा जाता है कि तब से ही हनुमान जी यहीं पर रहते हैं। कहते हैं कि हनुमान जी यहां पर अंजनी माता की गोद पर हैं।

संदीप ओझा : मान्यता ये भी है कोई भक्त जब अयोध्या आता है तो पहले वो हनुमान जी के दर्शन करने पहुंचता है, क्योंकि उसे रामलला के दर्शन का पुण्य ही तब मिलेगा जब वो यहां पर दर्शन करने आएगा, क्या है यहां कि सही मान्यता गद्दीनशीन महंत प्रेमानंद महाराज जी बताएं ?

महंत प्रेमानंद: हनुमान जी का महत्व तीनों काल और चारों जुग में रहा है। ये महत्व अनंत अनादि है। त्रेता में जब भगवान राम रावण को मारकर यहां पर आए, यहां पर भगवान जितने भी बंदर और भालू को लेकर आए, यहां 6 महीने रखने के बाद सबको विदा कर दिए, लेकिन अपने सेवा में भगवान राम ने हनुमान जी रहने की इजाजत दी। तब से हनुमान जी यहां पर रहने लगे, तब से 11 हजार वर्ष तक पूरे भूमंडल का राज उन्होंने संभाला। जब 11 हजार वर्ष बीत गये और भगवान का यहां से जाने का समय आ गया, तब उन्होंने लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न के पुत्रों को अलग-अलग जगहों पर राज करने दिया। लेकिन हनुमान जी को हनुमानगढ़ी जो दशरथ किला का मुख्य गेट है, यहां पर बैठाकर राजतिलक लगा दिए और कहा कि आप यहां पर हमेशा के लिए अयोध्या में ही निवास करो। तभी से यहां पर हनुमान जी महाराज का विशेष महत्व बना हुआ है।

संदीप ओझा: महाराज जी आप हमें समझाएं यहां की व्यवस्था अब कैसे काम करती है ?

महंत प्रेमानंद: यहां जो किला है, यहां कि जो नियमावली है, यहां की जो पंचायती व्यवस्था है, वो यहां के पंचों के हिसाब से चलती है। निर्वाणी अखाड़े और उनके पंचों के अनुसार यहां कि व्यवस्था चलती

है। यहां पर पांच महंत हैं, जिसमें सर्वश्रेष्ठ गद्दीनशीन हैं, जिस पर हनुमान जी अपनी गोद में बैठाए हैं। इसके अलावा चार अलग-अलग पट्टियां हैं।

संदीप ओझा: महंत जी गद्दीनशीन क्या पदवी होती है, ये हमारे दर्शकों को समझाइए ?

महंत प्रेमानंद: गद्दीनशीन का मतलब होता है कि हनुमान जी के बाद उसका स्वरूप। हनुमान जी सभी भक्तों को अपना चमत्कार नहीं दिखा सकते, मानवरूप में इस मंदिर में गद्दीनशीन को बैठाया जाता है। जैसे हमारे देश के संविधान में राष्ट्रपति को जो पद होता है, वहीं हनुमानगढ़ी में गद्दीनशीन का होता है। इसके अलावा भारत में जैसे प्रांत होते हैं, उसी तरह से यहां पर भी चार प्रांत हैं। पट्टी सगरिया, पट्टी उजैनिया, पट्टी बसंतिया, पट्टी हरद्वारी सब जगह के अलग-अलग महंत हैं, उसे आप ऐसे समझिए जैसे प्रांत के मुख्यमंत्री होते हैं। इन महंतों की जब नियुक्ति हो जाती है तो वो अजीवन रहती है। बशर्ते यहां के समाज के वो अनुकूल रहें, अगर प्रतिकूल चले तो उन्हे हटाया भी जा सकता है ऐसा इसका नियम है।

संदीप ओझा: कहते हैं जैसे आप गद्दीनशीन हैं, तो आप हनुमानगढ़ी के नीचे नहीं उतर सकते ?

महंत प्रेमानंद: बिल्कुल ये नियम है, ये खुद बजरंगबली के द्वारा बनाई गई व्यवस्था है कि आप यहां से कहीं नहीं जा सकते हैं। हमें सरयू जल से स्नान करना है उसे लाने का काम यहां के सेवक का काम है। सरयु का दर्शन करना है तो किले पर चले जाइए, लेकिन हनुमानगढ़ी छोड़कर कहीं नहीं जा सकते हैं और ये नियम कुछ दिनों के लिए नहीं है, जब तक हम यहां रहेंगे यहां से छोड़कर हनुमानगढ़ी के बाहर नहीं जा सकते हैं।

संदीप ओझा: महाराज जी अयोध्या हमेशा से राजनीति का मुख्य केंद्र बना रहा है, क्या वाकई में अयोध्या के नाम पर देश में सिर्फ राजनीति हुई है ?

महंत प्रेमानंद: मैं साल 1962 से अयोध्या में हूं, जब तत्कालीन नेहरू जी का निधन हुआ था तब मैं आठवीं का छात्र था। नेहरू जी से लेकर आज तक के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को मैंने देखा, लेकिन उसमें से कोई माई का लाल नहीं निकला, राम जन्मभूमि तो छोड़िए जो ये कहे कि अयोध्या भारत में है। सब कहते थे अयोध्या थाईलैंड में है, तो कोई कुछ बताता था। लेकिन भगवान राम के सेवा में जो मुख्य 18 बंदर थे उनमें मुख्य श्री हनुमान जी महाराज जो सुग्रीव के गढ़ थे, केवल वहीं भगवान के नजर में आए और ये जान गये कि इन्हीं के माध्यम से यहां सभी कार्य होने वाले हैं। भगवान ने उन्हें पास में बुलाकर मुद्रिका दी और बता दिया कि सीता को ऐसे-ऐसे समझा देना। तो आज भी भगवान राम के कुछ राजनीतिक दल राजनीति कर रहे हैं, कई लोगों ने तो यहां आने से भी मना कर दिया, उनका अपना-अपना फायदा है, इसलिए वो रामलला के प्राण प्रतिष्ठा में नहीं पहुंच रहे।

संदीप ओझा: महाराज जी कहते हैं कि मुगल नबावों ने यहां की मंदिर का निर्माण करवाया था। इसके पीछे क्या सच्चाई है।

महंत प्रेमानंद: यहां पर अभी कार्य चल रहा है, इसका चौड़ीकरण भी होने जा रहा है। हमारे यहां जो बाबा अभयराम दास महाराज जी थे, जो हनुमान जी के अनन्य भक्त थे। मुगल काल में जो सिराजुद्दौला था। उसका एक मात्र पुत्र था। उसे कुष्ठ का रोग हो गया था। क्योंकि वो बादशाह था अपने समय का तो उसने दुनिया भर के वैद्य से दवा करवाई लेकिन कहीं से भी उसे आराम नहीं मिला। उसका एक मंत्री था, उसने बताया कि फकीराबाद जिसे आज फैजाबाद के नाम से जाना जाता है, उसने बताया कि वहां एक हिन्दू फकीर है, अगर उसने दुआ दे दी तो तुम्हारा बच्चा ठीक हो जाएगा। हालांकि वो तो नहीं आया, लेकिन उसकी बेगम अपने बच्चे को लेकर यहां पर आई, वहां उस समय जो बाबा यहां पर हनुमान जी की सेवा में लगे थे। उन्होंने आरती भभूत उसे दे दिया और उसका बच्चा ठीक हो गया। जब ठीक हो गया तो सिराजुद्दौला को समाचार मिला। तो वो वहां से यहां पर आया और कहने लगा कि हमारे पास बहुत धन है, आपको जो चाहिए वो मांग लो। उस पर बाबा नाराज हो गये, उन्होंने कहा कि तुम नवाब होगे, लेकिन मैं जिसकी सेवा में हूं वो तुम्हारे जैसे कितने नवाबों के भी नवाब हैं। लेकिन एक और सेवक जो हनुमान जी के सेवक का सेवक था, उसने बोला आने वाले समय में यहां पर लोग दर्शन करने आएंगे। तो उनके लिए इसके द्वारा कुछ बनवा लीजिए। तो उन्होंने कहा यहां पर सुग्रीव किला है, अंगल किला है, उसी तरह से यहां पर हनुमान जी का यहां पर कोट बनवा दीजिए, तो यहां पर चारों दिशा में चार किला हैं। वर्तमान में हनुमानगढ़ी में 600 साधू हैं। उनकी सारी व्यवस्था यहां से ही होती है। इसे चलाने के लिए एक नई व्यवस्था का भी गठन किया गया। जिसके माध्यम से आज भी ये चल रहा है। जिस तरह से पूरा भारत है, उसी तरह से पूरी हनुमानगढ़ी है।

ये बात चीत अयोध्या में हनुमानगढ़ी मंदिर प्रांगण में हुई। महंत प्रेमानंद भक्तों से घिरे हुए थे। उनके पास समय का अभाव भी था। हम कोशिश करेंगे हनुमानगढ़ी के महंत से विस्तार से चर्चा कर आपको मंदिर की मान्यताओं और कथाओं की पूरी जानकारी पहुंचाने की।

अयोध्या के महापौर का विशेष साक्षात्कार

अयोध्या में भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद जब उनकी पहली झलक देखने को मिली हर कोई उनके आकर्षक रूप को देखकर मोहित हो गया। श्यामल रूप, सिर पर मुकुट, गले में वैजयंती माला हाथों में धनुष बाण।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का दिन ऐतिहासिक था। अयोध्या की पूरी तस्वीर बदल चुकी है। यहां पर जो काम हुए वो अद्भुत है। आज अयोध्या कितनी बदल चुकी है, इसे जानना और देखना है, तो आपको अयोध्या आना पड़ेगा। यकीन मानिए अयोध्या के विकास की मिसाल चारों ओर दी जा रही है। अयोध्या की बदली तस्वीर और प्राण प्रतिष्ठा के बारे में NOW NOIDA UPDATE को जानकारी यहां के महापौर गिरीश पति त्रिपाठी ने दी। उन्होंने जो कुछ अयोध्या के बारे में बताया आपको भी इसे जानना चाहिए।

संदीप ओझा- गिरीश पति त्रिपाठी जी अयोध्या के महापौर हैं। आपके बारे में अयोध्यावासी इस तरह जानते हैं, कि अगर आपका नाम भी बाहर से आए श्रद्धालुओं को नहीं पता, तो इतना पूछ लीजिए कि मुझे महापौर के घर जाना है, वो आपको इनका पता और उनके खुद के बारे में पूछने के संकेत देते हैं। महापौर जी पहले तो आप हमें बताएं आपके महंत से महापौर के सफर के बारे में।

गिरीश पति त्रिपाठी- महंत थे तो भगवान राम की सेवा करते थे, आज उन्हीं के आदेश पर जनता की भी सेवा कर रहे हैं। लेकिन मैं महापौर से पहले भगवान राम के सेवक हैं, उन्हीं की अनुमति मिली उनके जनता की सेवा करने की तो उनके नगर के सेवा में जुट गये हैं।

संदीप ओझा- प्राण प्रतिष्ठा हो गया, और क्या-क्या चल रहा है भगवान राम के नगर में?

गिरीश पति त्रिपाठी- आपने भी पूरा अयोध्या घूमा, क्या साल या फिर दो साल में कोई नगर इतना परिवर्तित हो सकता है। उसी को जीता-जागता उदाहरण है अयोध्या। इस शहर का पूरी तरह से कायाकल्प हो चुका है। अभी भी कई काम विश्वस्तरीय यहां पर हो रहा है। चाहे राम पथ हो, भक्ति पथ हो, जन्मभूमि पथ हो। कहीं पर आप जाएंगे तो आपको अविश्वसनीय विकास आपको देखने को मिलेगा। इसके अलावा चाहे एयर कनेक्टिविटी हो, रेलवे कनेक्टिविटी हो, या फिर सफाई की व्यवस्था और सरयू के जल और घाट पर जो काम हुए वो अविश्वसनीय और अकल्पनीय है। जो अयोध्यावासी या फिर देश के लोगों ने सोचा नहीं था वो सब कुछ अयोध्या में हुआ है। अयोध्या आज अपने दिव्यता और भव्यता की ओर आगे बढ़ चुका है। ये सिर्फ बताया नहीं जा रहा है कोई भी अयोध्या आकर साक्षात इसे देख भी सकता है। आज अयोध्या अपने गरिमा के अनुरूप है लेकिन एक वक्त ऐसा था, जब हमें ये लगने लगा था कि क्या इतने कम समय में ये काम संभव हो पाएगा। लेकिन दिन रात की मेहनत आज सफल हो गई है।

संदीप ओझा- भक्तों के लिए यहां-यहां क्या इंतजाम हैं, ताकि उन्हें कोई परेशानी ना उठानी पड़े।

गिरीश पति त्रिपाठी- यहां पर भक्तों के लिए जगह-जगह हीटर और अलाव की व्यवस्था की गई है। ताकि इतनी भीषण ठंड में किसी श्रद्धालु को तकलीफ ना उठानी पड़े। इसके अलावा नगर निगम के अस्थायी आवास बनाए गये हैं। यहां पर अभी तीन निवास राम भक्तों के लिए बनाये गये हैं। जिसमें पांच हजार श्रद्धालु एक अस्थायी निवास में ठहर सकते हैं। इसके अलावा टेंट सिटी बनाए गये हैं। जिसमें बेड और कंबल तक राम भक्तों के लिए दिया गया है। शौचालय और सुरक्षा के लिए सीसीटीवी की व्यवस्था भी दी गई है। कुल मिलाकर ये कोशिश की गई है कि किसी भी श्रद्धालु को किसी तरह की अव्यवस्था का सामना ना करना पड़े, इस पर विशेष ध्यान दिया गया है। साथ ही यहां पर श्रद्धालुओं के लिए आधुनिकता के साथ पौराणिकता की अनुभूति हो इसकी पूरी कोशिश शासन और जिला प्रशासन की तरफ से की गई है।

संदीप ओझा- शंकराचार्य रामलला की प्राण प्रतिष्ठा में नहीं पहुंचे, इस पर कोई टिप्पणी देना चाहते हैं।

गिरीश पति त्रिपाठी- शंकराचार्यों का हम सब आदर करते हैं, उन्हें निमंत्रण भी गया लेकिन वो यहां नहीं आए। आप बताइए क्या शंकराचार्य मंदिर आंदोलन में आए थे? क्या उन्होंने मंदिर के लिए कोई काम किया था? जब राम भक्तों पर गोलियां चली थी तो क्या शंकराचार्य यहां पर आए थे? जब पूरे देश में मंदिर आंदोलन चल रहा था तो क्या शंकराचार्य यहां पर आए थे? फिर प्राण प्रतिष्ठा में शंकराचार्य के आने की क्या आवश्यकता। अगर उन्हें आना होता तो वो आते नहीं आए तो उनकी मर्जी।

बुलंदशहर को पीएम मोदी ने दिया 20 हजार करोड़ की सौगात, बोले- अब राष्ट्र प्रतिष्ठा को नई ऊंचाई देने का समय

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 25 जनवरी को उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर पहुंचे। पीएम ने इस दौरान कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया। उद्घाटन के बाद पीएम ने जनसभा को भी संबोधित किया। इससे पहले मंच पर स्थानीय नेताओं ने उन्हें भगवान राम की मूर्ति भेंट की। सीएम योगी आदित्यनाथ ने पीएम नरेंद्र मोदी का स्वागत किया। जनता के प्रति पीएम ने जताया आभार जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने सबसे पहले राज्यपाल, सीएम योगी आदित्यनाथ, डिप्टी सीएम बृजेश पाठक, केंद्रीय मंत्री वीके सिंह, बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी और अन्य नेताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने लोगों से कहा कि, आपका ये प्यार और विश्वास जीवन में इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है। मैं आपके प्यार के लिए अभिभूत हूं। यह समय माताओं और महिलाओं के लिए सबसे व्यस्त समय होता है, लेकिन सब कुछ छोड़कर माता और बहनें आशीर्वाद देने आईं, इसके लिए प्रणाम। 22 तारीख को अयोध्या धाम में प्रभु श्रीराम के दर्शन हुए और अब यहां जनता के दर्शन का सौभाग्य मिला है। पश्चिमी यूपी को विकास के लिए 19 हजार करोड़ से अधिक के प्रोजेक्ट भी मिले हैं।

भाषण के दौरान क्या बोले पीएम मोदी पीएम मोदी ने कहा, "मैं बुलंदशहर समेत वेस्टर्न यूपी के सभी परिवारजनों को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। भाइयों और बहनों इस क्षेत्र ने तो देश को कल्याण सिंह जैसा सपूत दिया है, जिन्होंने राम काज और राष्ट्र काज दोनों के लिए अपना जीवन समर्पित किया। आज वो जहां हैं, अयोध्या धाम को देखकर बहुत आनंदित हो रहे होंगे। ये हमारा सौभाग्य है कि देश ने कल्याण सिंह जैसे और उनके जैसे अनेक लोगों का सपना पूरा किया है, लेकिन अभी भी सशक्त राष्ट्र निर्माण का, सच्चे सामाजिक न्याय का उनका स्वप्न पूरा करने के लिए हमें अपनी गति बढ़ानी है। इसके लिए हमें मिलकर काम करना है"

पीएम मोदी ने आगे कहा साथियों, "आजादी के बाद के दशकों में लंबे समय तक भारत में विकास को सिर्फ कुछ ही क्षेत्रों में सीमित रखा गया, देश का एक बहुत बड़ा हिस्सा विकास से वंचित रहा। इसमें भी उत्तर प्रदेश जहां देश की सबसे अधिक आबादी बसती थी, उस पर उतना ध्यान नहीं दिया गया। ये इसलिए हुआ क्योंकि लंबे समय तक यहां सरकार चलाने वालों ने शासकों की तरह बर्ताव किया, जनता को अभाव में रखने का, समाज में बंटवारे का रास्ता उनको सत्ता पाने का सबसे सरल माध्यम लगा, जिसकी कीमत उत्तर प्रदेश की अनेक पीढ़ियों ने भुगती है। लेकिन साथ-साथ देश को भी इसका बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। जब देश का सबसे बड़ा राज्य ही कमजोर हो तो देश कैसे ताकतवर हो सकता था."

'पहली नमो भारत ट्रेन भी पश्चिमी यूपी में' उन्होंने कहा कि, आज भारत में दो बड़े डिफेंस कॉरिडोर पर काम चल रहा है, उनमें से एक पश्चिमी यूपी में बन रहा है। आज भारत में नेशनल हाईवे का तेजी से विकास हो रहा है, उसमें से अनेक प्रोजेक्ट पश्चिमी यूपी में बन रहे हैं। आज हम यूपी के हर हिस्से को आधुनिक एक्सप्रेस वे से कनेक्ट कर रहे हैं। भारत का पहला नमो भारत ट्रेन प्रोजेक्ट पश्चिमी यूपी में ही शुरू हुआ है. यूपी के कई शहर मेट्रो सुविधा से जुड़ रहे हैं। यूपी ईस्टर्न और वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का हब बन रहा है। आने वाली शताब्दियों का इसका महत्व रहेगा, जो आपके नसीब में आया है। जब जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट बनकर तैयार हो जाएगा, तो इस क्षेत्र को नई ताकत और नई उड़ान मिलने वाली है।

इन प्रोजेक्ट का किया उद्घाटन बुलंदशहर में कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (डीएफसी) पर न्यू खुर्जा-न्यू रेवाड़ी के बीच 173 किलोमीटर लंबी डबल लाइन, मथुरा-पलवल सेक्शन और चिपियाना बुजुर्ग-दादरी सेक्शन को जोड़ने वाली चौथी लाइन, अलीगढ़ से भदवास चार लेन वाला वर्क पैकेज-1 (एनएच-34 के अलीगढ-कानपुर खंड का हिस्सा), एनएच-709 ए की चौड़ाई बढ़ाने, एनएच-709 एडी पैकेज-II के शामली-मुजफ्फरनगर सेक्शन को चार लेन करने व अन्य रोड प्रोजेक्ट का उद्घाटन किया।

इनका भी उद्घाटन पीएम मोदी ने किया प्रधानमंत्री इस दौरान इंडियन ऑयल की टूंडला-गवारिया पाइपलाइन का भी उद्घाटन किया। करीब 700 करोड़ रुपये की लागत से बना यह 255 किलोमीटर लंबा पाइपलाइन प्रोजेक्ट तय समय से काफी पहले पूरा हो गया है। पीएम ग्रेटर नोएडा में 747 एकड़ में फैले इंटीग्रेटिड इंडस्ट्रियल टाउनशिप प्रोजेक्ट का भी उद्घाटन किया। 1,714 करोड़ रुपये की लागत वाला यह प्रोजेक्ट दक्षिण में ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे और पूर्व में दिल्ली-हावड़ा ब्रॉड गेज रेलवे लाइन के साथ लगा है। इसके अलावा पीएम करीब 460 करोड़ रुपये की लागत से बने सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी), मथुरा सीवरेज योजना, मुरादाबाद (रामगंगा) सीवरेज प्रणाली और एसटीपी कार्यों का भी उद्घाटन किया।

किस प्रोजेक्ट की क्या है अहमियत? नया डीएफसी सेक्शन काफी महत्वपूर्ण है. यह पश्चिमी और पूर्वी डीएफसी को जोड़ता है। यह सेक्शन इसके अलावा खास इंजीनियरिंग उपलब्धि के लिए भी जाना जाता है। इसमें 'ऊंचाई पर इलेक्ट्रिक वर्क के साथ एक किमी लंबी डबल लाइन रेल सुरंग भी है जो दुनिया में अपनी तरह की पहली सुरंग है. इस सुरंग को डबल-स्टैक कंटेनर ट्रेनों को निर्बाध रूप से संचालित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह नया डीएफसी सेक्शन डीएफसी ट्रैक पर मालगाड़ियों के डायवर्जन के चलते यात्री ट्रेनों के संचालन को बेहतर बनाने में मदद करेगा। मथुरा-पलवल सेक्शन और चिपियाना बुजुर्ग-दादरी जंक्शन से दिल्ली की दक्षिणी पश्चिमी और पूर्वी भारत तक रेल कनेक्टिविटी में सुधार आएगा। इंडियन ऑयल की टूंडला-गवारिया पाइपलाइन से मथुरा और टूंडला में पंपिंग सुविधाओं और टूंडला, लखनऊ और कानपुर में डिलीवरी सुविधाओं के साथ बरौनी-कानपुर पाइपलाइन के टूंडला से गवारिया टी-पॉइंट तक पेट्रोलियम उत्पादों के ट्रांसपोर्टेशन में काफी राहत मिलेगी।

बड़े बड़े स्टार्स को पछाड़, ये कपूर एंड कंपनी बनाएंगे नई फिल्म सिटी

उत्तर प्रदेश में बनने जा रही दूसरी और बिग फिल्म सिटी को कौन बनाएगा ये साफ हो गया है। एक से एक नामी फिल्म सितारे इस रेस में थे लेकिन बाजी मारी है फिल्म निर्माता बोनी कपूर एंड कंपनी ने। नई फिल्म सिटी को बनाने के लिए बोनी कपूर की बोली सबसे हिट रही। मुंबई के बड़े नामचीन सितारे और दिग्गज फिल्म कंपनियों ने नई फिल्म सिटी के निर्माण में दिलचस्पी दिखाई थी लेकिन बोनी को ही क्यों मिला जिम्मा जानिए हमारे इस विशेष आर्टिकल को पढ़कर।

चार कंपनियों ने शनिवार को यूपी के अधिकारियों के सामने अपनी प्रेजेंटेशन दी थी। इन चारों में से सबसे ज्यादा रेवेन्यू शेयर करने वाली कंपनी के नाम नोएडा फिल्म सिटी बनाने का जिम्मा दिया जाना था। आज वो दिन आ ही गया, जब फिल्म सिटी बनाने वाली कंपनी का नाम सामने आ गया। बोनी कपूर और भूटानी ग्रुप की कंपनी बेव्यू प्रोजेक्ट्स एलएलपी ने ये बाजी अपने नाम कर ली है।

इन कंपनियों ने दिया था प्रेजेंटेशन

उत्तर प्रदेश सरकार के अधिकारियों के सामने इंटरनेशनल फिल्म सिटी ग्रीनफील्ड प्रोजेक्ट के लिए सुपर कैसेट्स इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड (टी-सीरीज), सुपरसोनिक टेक्नोबिल्ड प्राइवेट लिमिटेड (मैडॉक फिल्म्स, केप ऑफ गुड फिल्म्स एलएलपी और अन्य), बेव्यू प्रोजेक्ट्स एलएलपी (बोनी कपूर और अन्य) और 4 लायंस फिल्म्स प्राइवेट लिमिटेड (केसी बोकाडिया और अन्य) ने शनिवार को अपनी प्रेजेंटेशन दी थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता यूपी के औद्योगिक एवं अवस्थापना विकास आयुक्त मनोज कुमार सिंह, प्रमुख सचिव एवं चेयरमैन यमुना एक्सप्रेसवे अथॉरिटी अनिल सागर, निदेशक सूचना शिशिर सिंह, यमुना एक्सप्रेसवे अथॉरिटी के सीईओ अरुण वीर सिंह और परियोजना के ओएसडी शैलेंद्र भाटिया ने की थी।

बेव्यू प्रोजेक्ट्स एलएलपी ने मारी बाजी

उत्तर प्रदेश के यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में इतिहास रचा गया। जिसमें मंगलवार को यमुना प्राधिकरण में एक और मील का पत्थर सीईओ अरुणवीर सिंह ने रख दिया। फिल्म सिटी को धरातल पर उतार दिया गया। बिड में बेव्यू प्रोजेक्ट्स एलएलपी ने बाजी मारी है। फाइनल बिड में 18 परसेंट के रेवेन्यू के साथ बेव्यू ग्रुप ने फिल्म सिटी पर अपना कब्जा जमा लिया। इसके साथ ही गौतमबुद्ध नगर के जेवर में बनने वाली फिल्म सिटी को लेकर अंतिम मुहर लगा दी गई। निर्माता-निर्देशक बोनी कपूर और रियल एस्टेट कंपनी भूटानी ग्रुप मिलकर जेवर में फिल्म सिटी के लिए 18% रेवेन्यू बोली लगाकर फिल्म सिटी पर अपना परचम लहराया। इस परियोजना के लिए अभिनेता अक्षय कुमार की कंपनी भी दौड़ में शामिल थी। जो 10% पर रहे। इनसे आगे केसी बोकाडिया 15% पर और टी-सीरीज ने 5% तक ही अपनी रेवेन्यू बोली रखी।

ये सुपरस्टार्स थे लाइन में

फिल्म सिटी बनाने के लिए मशहूर एक्ट्रेस कंगना राणावत, अक्षय कुमार, बोनी कपूर, गुल पनाग और मशहूर डायरेक्टर केसी बोकाडिया लाइन में लगे थे। बालाजी टेलीफिल्म, सोनी टीवी, तुलिप कंपनी और एक कोरियाई कंपनी ने फिल्म सिटी में जमीन लेने में रुचि दिखाई थी।

जेवर बना निवेशकों की पहली पसंद

यमुना सिटी निवेश के मामले में पूरे उत्तर प्रदेश में नंबर वन पर पहुंच गया है। इसी वजह से इसे औद्योगिक नगरी भी कहा जाता है। आज नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के अलावा देश की सबसे बड़ी फिल्म सिटी जेवर में बनने जा रही है। इसको लेकर तैयारियां तेजी से चल रही हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने फिल्म सिटी परियोजना को अगले 6 महीने में धरातल पर उतारने के निर्देश दिए हैं।

पहले चरण में 230 एकड़ जमीन पर बनेगी फिल्म सिटी

बता दें कि यमुना सिटी के सेक्टर-21 में फिल्म सिटी बनेगी। ये फिल्म सिटी एक हजार एकड़ जमीन पर प्रस्तावित है। पहले चरण में 230 एकड़ जमीन पर फिल्म सिटी को विकसित किया जाएगा। यमुना विकास प्राधिकरण के अफसरों ने बताया कि जो कंपनी पहले चरण में फिल्म सिटी बनाएगी। उसकी दूसरे चरण में भी प्राथमिकता दी जाएगी। फिल्म सिटी बनाने वाली कंपनी के लिए एक बात स्पेशल यह होगी कि पूरी जमीन पर बिजली की लाइन, सीवर और अन्य सुविधा उसी को करवानी पड़ेगी। इसके लिए फिल्म सिटी से जुड़ी कंपनियों को ही जिम्मेदारी दी जाएगी।

यूनुस आलम
ब्यूरो चीफ, नोएडा

योगी को धमकी, कौन है खालिस्तानी आतंकी पन्नू?

यूपी एटीएस ने 18 जनवरी 2024 को अयोध्या में तीन संदिग्ध को गिरफ्तार किया था। इन तीनों से जो जानकारी मिली उसने पूरे प्रदेश में हड़कंप मचा दिया था। गिरफ्तार हुए गैंगस्टर शंकर लाल के साथ राजस्थान के ही अजीत कुमार शर्मा और प्रदीप पुनिया अयोध्या में रेकी कर रहे थे। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर आतंकी वारदात को अंजाम देने के मिशन पर निकले इन तीनों के तार इंटरनेशनल आतंकी के संगठन से जुड़े पाए गए। ये आतंकी संगठन है सिख फॉर जस्टिस। वही टेरर ग्रुप जिसका आका भारत विरोधी अभियान चलाने के लिए कुख्यात है। यूपी में हुई इस गिरफ्तारी के बाद विदेश में बैठा आतंकी आका बौखला गया। और उसने यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ को धमकी तक दे डाली। अपने जहरबुझे बयान के बदनाम इस आतंकी आका को दुनिया गुरुपतवंत सिंह पन्नू के नाम से जानती है। पन्नू का आतंकी पुराण पढ़ने से पहले जानिए गिरफ्तार हुए तीनों गुर्गों ने पूछताछ में क्या उगला।

गिरफ्तारी के बाद पन्नू के एजेंट ने ये कबूल किया कि वो अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम से पहले हमले की साजिश के तहत वहां पहुंचे थे। तीनों आरोपितों को पन्नू ने अपने संगठन का सदस्य बताया था। शंकर लाल ने अपने मोबाइल फोन से कई मैसेज व वाट्सएप चैट डिलीट कर दी थी। प्रतिबंधित आतंकी संगठन सिख फॉर जस्टिस (एसएफजे) के मुखिया आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू ने उसी शाम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर आपत्तिजनक टिप्पणी करते हुए उन्हें धमकी दी। गुरपतवंत सिंह पन्नू ने इस संदर्भ में मोबाइल पर भेजी गई रिकॉर्डिंग में कहा है कि आपकी पुलिस ने अयोध्या से खालिस्तान समर्थक दो युवकों को गिरफ्तार किया है। उन्हें प्रताड़ित किया जा रहा है और उनके विरुद्ध झूठा मुकदमा बनाया जा रहा है। सीएम योगी को दी गई धमकी में कहा गया है कि 22 जनवरी को अयोध्या में हो रहा राम मंदिर समारोह आपको

गिरफ्तारी के बाद पन्नू के एजेंट ने ये कबूल किया कि वो अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम से पहले हमले की साजिश के तहत वहां पहुंचे थे।

एसएफजे से बचा नहीं पाएगा। एसएफजे की तरफ से 22 को इसका जवाब दिया जाएगा। राम मंदिर कार्यक्रम में सीएम योगी को निशाना बनाने की धमकी खालिस्तान समर्थक ने दी थी।

यूनाइटेड किंगडम के नंबर 447537131903 से भेजी गई धमकी के बारे में डीजी कानून व्यवस्था प्रशांत कुमार ने कहा कि पुलिस के संज्ञान में मामला आया है, इसकी पड़ताल की जा रही है।

सीएम योगी को दी गई धमकी में कहा गया है कि 22 जनवरी को अयोध्या में हो रहा राम मंदिर समारोह आपको एसएफजे से बचा नहीं पाएगा

गुरपतवंत सिंह पन्नू ने पंजाब में सिखों के लिए एक अलग राज्य की वकालत कर जमकर सुर्खियां बटोरीं. साल 2007 में पन्नू ने सिख फ़ॉर जस्टिस की स्थापना की थी. हालांकि पन्नू की इन सब हरकतों की वजह से भारत सरकार ने साल 2020 में आतंकवादी घोषित किया था. इससे पहले गृह मंत्रालय ने 10 जुलाई 2019 को यूएपीए के तहत 'सिख फ़ॉर जस्टिस' संगठन पर प्रतिबंध लगाया था. पन्नू को आतंकवादी घोषित करने के साथ ही उसकी कृषि भूमि को गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम की धारा 51 ए के तहत जब्त कर लिया गया था. पन्नू वर्तमान में पंजाब में राजद्रोह के तीन आरोपों सहित 22 आपराधिक मामलों का सामना कर रहा है.

गुरपतवंत पन्नू अमृतसर के खानकोट का रहने वाला है। पंजाब यूनिवर्सिटी से लॉ की पढ़ाई की है। पढ़ाई पूरी करने के बाद वह विदेश चला गया जहां उसने पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के साथ मिलकर पंजाब में खालिस्तानी अलगाववादी मुहिम चलाता है। पन्नू के पिता महिंदर सिंह पंजाब में कृषि विपणन बोर्ड में काम करते थे। खलिस्तान समर्थक पर 2019 में भारत आने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। फिलहाल वह अमेरिका और कनाडा में रह रहा है।

शिप्रा सचदेव,
फलादेश विशेषज्ञ, प्रयागराज

भाग्य का लेखा-जोखा

अंक ज्योतिष के माध्यम से हम हमारे जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं। आज हम जानेंगे की कैसे हम अपने नंबरों का योग करके अपने भाग्य के बारे में जान सकते हैं और उसमें सुधार भी कर सकते हैं।

अगर किसी की तिथि 9-1-1980 है तो उसका अंक योग 9+1+1+9+8+0=28 (2+8=10) यानी कि 1 है। 1अंक सूर्य का होता है। 1,10,19 वाले लोग सूर्य वाले होते हैं यानी कि इनका स्वामी सूर्य होता है।

अगर आपका अंक योग एक आ रहा है तो आपको सूर्य देव को जल अवश्य चढ़ाना चाहिए, दूसरा आपको ताबे के बर्तन में जल अवश्य पीना चाहिए, आपको अपना नया कार्य रविवार के दिन करना चाहिए। रविवार के दिन किसी बुजुर्ग को दान अवश्य देना चाहिए। अगर किसी शुभ कार्य के लिए जा रहे हैं तो किसी बड़े बुजुर्ग का आशीर्वाद लेकर निकलना चाहिए आपके कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ रविवार के दिन अवश्य करना चाहिए। शुभ रंग आपके लिए लाल और पीला है।

एक अंक योग वाले जातक बहुत साहसी होते हैं, आप में आत्म बल बहुत ज्यादा होता है, एक अंक योग वाले जातक आत्मा से बहुत शुद्ध होते हैं ऐसे जातकों को झूठ पसंद नहीं होता ऐसे व्यक्ति हठी भी होते हैं, जिंदगी में जो ठान लिया उसे पाने के लिए वह अपना 100% देते हैं। ऐसे जातकों को राजसत्ता की तरफ से फायदे भी बहुत मिलते हैं, इनकी सूर्य की दशा या अंतर्दशा आती है तो उन्हें उच्च अधिकारियों के द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। जिनका अंक योग एक होता है ऐसे जातक अगर अपना कार्य करते हैं तो वह ज्यादा सफल होते हैं क्योंकि उन्हें किसी के अंदर कार्य करना पसंद नहीं होता, वह कभी गलत बातों को मान नहीं पाते, किसी की जी हजूरी करना करना आपको पसंद नहीं आता है। ऐसे व्यक्ति देश के लिए भी कुछ अवश्य करते हैं और देशभक्त होते हैं।

अगले अंक में अलग नबरों के जातकों का अंकशास्त्र

NOW NOIDA अपडेट

सत्य से साक्षात्कार

पत्रिका सदस्यता प्रपत्र

भारत के व्यक्तियों के लिए वार्षिक सदस्यता: ₹1,440 ☐

भारत के बाहर और कॉर्पोरेट दरें: ₹2,000 ☐

Name .....

Address.....

.....

.....

.....

Postcode.....

Telephone.....

Email.....

कृपया चेक या पोस्टल ऑर्डर करें

MBI Digital Private Limited को देय।

MBI
Made By India
DIRECT FROM FACTORY

Organic Cotton Muslin Baby Swaddle clothes

HIGH-QUALITY BAMBOO T-SHIRTS

Direct from Factory

SHOP AT

www.madebyindia.com

Plot no. 99, Ecotech-3, Greater Noida | sales@madebyindia.com | 07011412854